।। ॐ संभूत्या अमृतमश्नुते ।। संगठन से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है।।

मातृभूमि की धर्मध्वजा का अभिनंदन वंदन। राष्ट्र देवता के चरणों में पावन शब्द नमन।।

पाक्षिक
पाथेय कण

ज्येष्ठ शु.७ युगाब्द ५११९, वि.२०७४

१ जून २०१७

वर्ष ३३ : अंक ५

अपनी बात

परम सुहृद पाठक–गण,

सप्रेम नमस्कार।

पाथेय कण का इस वर्ष का सदस्यता अभियान पूर्ण हो चुका है। सभी कार्यकर्ताओं से आग्रह है कि पतों की सूचियाँ एवं पावतियाँ जल्द से जल्द कार्यालय पर भिजवाने का श्रम करें, जिससे नये सदस्यों को पाथेय कण समय पर प्राप्त हो सके।

आशा है राष्ट्र–जागरण के महायज्ञ में आपका सहयोग निरंतर मिलता रहेगा।

इसी विश्वास के साथ।

जय श्रीराम।

आपका

प्रबंध सम्पादक

माणकचन्द

–: सदस्यता शुल्क :–

एक वर्ष	₹ 100/–
15 वर्ष	₹ 1000/–

प्रबंधकीय कार्यालय

'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र,
अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर,
जयपुर–302017 (राज.)

सम्पर्क : 9414447123, 9929722111
0141–2529334

Website: www.Patheykan.in
E-mail: patheykan@gmail.com

भविष्य की औषधियों की भी खान

हमारी गोमाता

गाय को विश्व की माता 'गावो विश्वस्य मातर' यूं ही नहीं कहा गया है। भारत में गाय ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं खेती का महत्वपूर्ण हिस्सा तो रही ही है हमारे स्वास्थ्य के साथ भी उसका लम्बा नाता रहा है। अब तो देश–विदेश में हुए अनेक शोधों ने सिद्ध कर दिया है कि हमारी कम दूध देने वाली देशी गायें इस प्रकृति का सबसे बड़ा उपहार हैं। वैज्ञानिक शोधों में यह प्रमाणित हो गया है कि इन गायों का दूध भले ही कम हो पर मानव शरीर के लिए इन गायों के दूध, दही, घी आदि से बढ़कर कुछ नहीं है। डायबिटीज, मोटापा, हृदयाघात जैसी नए जमाने की गंभीर बीमारियों का उपचार गोउत्पाद से ही सम्भव है। सबसे बड़ा योगदान तो यह है कि गाय का दूध, दही और घृत शरीर की रोगप्रतिरोधक क्षमता को बहुत बढ़ा देते हैं। कनाडा के एक विश्वविद्यालय में हुए शोध में पता चला है कि गाय में सबसे प्रभावशाली रोगप्रतिरोधक (एण्टीबॉडी) पाए जाते हैं। विश्वविद्यालय का दावा है कि भविष्य में सबसे कारगर वेक्सीन और दवाएं गोवंश से मिलने वाले रोगप्रतिरोधकों की सहायता से ही बनेंगी।

जो बात नवीन वैज्ञानिक शोध के आधार पर कनाडा के वैज्ञानिक कह रहे हैं, वह सदियों पहले हमारे ऋषि–मुनी आयुर्वेद के ग्रंथों में कह चुके हैं। शायद यही कारण रहे होंगे कि हमारे समाज ने गाय को माता का दर्जा दिया और कहा 'गावो विश्वस्य मातर'।

आयुर्वेद के लगभग सभी प्राचीन ग्रंथों में गाय या गोउत्पादों का उल्लेख है। आयुर्वेद ग्रंथों में गोउत्पादों से सम्बंधित कुल ४५०० औषधियाँ दी गई हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण है **सुवर्णप्राशन** नामक वेक्सीन जिसे लेने से बच्चा अधिकतर बीमारियों से तो बचता ही है, उसका शारीरिक एवं मानसिक विकास भी अच्छा होता है। यह पोलियो ड्रॉप, बीसीजी, हेपिटाइटिस वेक्सीन आदि से अधिक कारगर है। सुवर्णप्राशन सोने की भस्म, औषधियों से संवर्धित 'फोर्टिफाइड' घी (देशी गाय का) और गामा रेडिएटेड शहद से तैयार किया जाता है। कश्यप संहिता में प्राचीन बालरोग विशेषज्ञ महर्षि कश्यप ने सुवर्णप्राशन की महिमा यूं कही है–

सुवर्णप्राशनं ह्यतनमेधाग्निबलवर्धनम्। आयुष्यं वृष्यं वर्ण्यम् ग्रहापहम्।।

अर्थ–सुवर्णप्राशन कुषाग्रता, पाचनशक्ति और शारीरिक क्षमता बढ़ाता है। यह दीर्घायु देता है।

गुजरात में मिले आशातीत परिणाम

पिछले चालीस महीनों से गुजरात की कुछ चिन्हित स्कूलों में १० हजार बच्चों को सुवर्णप्राशन दी जा रही है। इसके सुखद परिणाम अभी से मिलने लगे हैं। यह पूरी परियोजना

धमार्थकाममोक्षाणाम् आरोग्यम् मूलमुत्तमम्।
रोगास्तस्यापहर्त्तार: श्रेयसो जीवितस्य च।।

नीरोग और स्वस्थ मनुष्य ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के मार्ग पर चल सकता है अर्थात् इनको साध सकता है। रोग स्वास्थ्य का अपहरण कर लेते हैं। मनुष्य के कल्याण और उसके जीवन को भी रोग नष्ट कर देते हैं। (इसलिए नीरोग रहने का प्रयत्न करना चाहिए।)

आयुर्वेद व्यासपीठ और विद्या भारती के संयुक्त तत्वावधान में चल रही है। प्रत्येक पुष्य नक्षत्र पर बच्चों को **सुवर्णप्राशन** दवा दी जाती है। हर महीने के आंकड़े इकट्ठे किये जा रहे हैं। बच्चे की पढ़ाई में प्रगति (क्लास परफोरमेंस), परीक्षा परिणाम और स्वास्थ्य का लेखा–जोखा रखा जा रहा है। दवा से बच्चों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में अभूतपूर्व सुधार देखा गया है।

स्वास्थ्य का खजाना गोदुग्ध

दूध को लेकर यूरोप और भारतीय संकल्पना में मूलभूत अंतर है। वे दूध को वसा जैसे मापदण्डों पर ही नापते हैं। इसलिए उनके पूरे डेयरी उद्योग में ज्यादा से ज्यादा दूध और अधिक वसा(फैट) की ही बात होती है। भारत की प्राचीन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद दूध के गुणों को महत्व देती है। हमारे लिए दूध केवल दूध नहीं, वह स्वास्थ्यवर्द्धक पेय और दवा है। देशी गाय का दूध, छाछ, घी, गोमूत्र और गोबर सभी में कोई न कोई औषधीय गुण है। हम गाय का दूध पी रहे हैं तो रोज स्वास्थ्यवर्द्धक दवा पी रहे होते हैं। गाय का घी हमेशा फायदा ही करता है। भैंस या जर्सी–होलिस्टीन गाय के घी की तरह नुकसान नहीं करता। देशी गाय कम दूध देती हो लेकिन हमारे और हमारे परिवार के अच्छे स्वास्थ्य की यही कुंजी है।

> **“हमारे लिए दूध केवल दूध नहीं, वह स्वास्थ्यवर्द्धक पेय और दवा है। देशी गाय का दूध, दही, छाछ, घी, गोमूत्र और गोबर सभी में कोई न कोई औषधीय गुण है। हम गाय का दूध पी रहे हैं तो रोज स्वास्थ्यवर्द्धक दवा पी रहे होते हैं।”**

सिद्ध हो चुकी प्रामाणिकता

गो विज्ञान शोध संस्थान पिछले एक दशक से प्राचीन आयुर्वेद ग्रंथों में मिले गोउत्पाद सम्बंधी औषधियों का आज के हिसाब से वैज्ञानिक परीक्षण कर रहा है। गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय से अब तक अनेक आयुर्वेद चिकित्सक गोउत्पादों पर आधारित दवाओं पर शोध कर चुके हैं। प्रत्येक शोध किसी एक औषधि विशेष पर किया गया और हर्ष का विषय है कि सभी औषधि योग प्रमाणिक पाए गए हैं। अब तक पथरी, हृदय रोग, मोटापा, अस्थमा, त्वचा रोग, मधुमेह जैसे रोगों में देशी गाय के दूध, दही, घी, गोमूत्र, गोबर से बनी दवाएं कारगर सिद्ध हो चुकी हैं।

क्षय रोग संहारक पंचगव्य

आयुर्वेद ग्रंथों में **पंचगव्य** का उल्लेख स्थान–स्थान पर किया गया है। यह देशी गाय के दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र के सम्मिश्रण से बनता है। हालांकि इन पांचों के अनुपात के हिसाब से अलग–अलग बीमारियों के लिए आठ तरह के पंचगव्य मिश्रण बनते हैं। पंचगव्य अब तक विषम ज्वर (टायफाइड) और टीबी (क्षयरोग) की सबसे कारगर दवा सिद्ध हो चुका है। क्षय रोग के मरीजों के लिए भारत सरकार करीब एक लाख ४७ हजार रुपए (प्रति मरीज) की दवा यूरोपीय देशों से आयात करती है।

इस एलोपेथिक दवा से मरीज डेढ़ वर्ष में ठीक होता है, जबकि पंचगव्य से टीबी का मरीज तीन महीने में ही ठीक हो जाता है। अन्य बीमारियों में भी पंचगव्य के असर का परीक्षण चल रहा है।

बिलोया हुआ घी ही उत्तम

शास्त्रों में घी बनाने की २२ विधियां बताई गई हैं। आज कल मुख्यतया तीन तरह की विधियों से घी निकाला जा रहा है। **पहला**– दूध की क्रीम निकालकर उससे घी बनाना। यही सबसे खतरनाक घी है। इससे स्वास्थ्य को फायदा कम और नुकसान अधिक होता है लेकिन डेयरी को उद्योग बना देने के कारण यही सबसे अधिक चलन में है। **दूसरा**– दूध की मलाई उतारते जाना और उसे दही के साथ जमाकर घी बनाना। ऐसा घी नेत्ररोगियों के लिए लाभदायक है। **तीसरा**–बिलोने में दही मथकर निकाला गया घी। यही विधि सर्वोत्तम है। **गो विज्ञान शोध संस्थान** के डॉ हितेश जानी का कहना है कि दही को मिक्सी में नहीं बिलोना चाहिए क्योंकि इससे दही के मालीक्यूल टूट जाते हैं और फिर न घी काम करता है और न ही छाछ में गुण बचते हैं। बिलोने में धीरे–धीरे मथा गया घी ही मानव शरीर के लिए सर्वोत्तम है। हृदयरोगियों के लिए तो बहुत ही अच्छा है। प्राचीन समय में इस विधि से निकाला गया घी इतना गुणकारी था कि दूर–दूर तक हम इसका निर्यात करते थे। यही कारण है कि मिस्र के पिरामिड में भी भारत की गायों का घी मिला है।

पशु उपचार में भी प्रभावी

पंचगव्य पशु उपचार में भी रामबाण है। देश में कुछ जगह पशुचिकित्सकों ने आयुर्वेद चिकित्सकों के साथ मिलकर पशुओं पर पंचगव्य का उपयोग किया तो उत्साहजनक परिणाम आए। गायों और भैंसों में स्तनरोग (मेस्टाइटिस) होता रहता है। गुजरात के दांतीवाड़ा में इस बीमारी की शिकार गायों को गोमूत्र की भाप, गोमूत्र, घी और त्रिफला गुगल से मात्र २३ दिन में ठीक कर दिया गया जबकि अन्य चिकित्सा पद्धतियों में इससे कहीं अधिक समय लगता है।

गाय से होकर ही जाएगा भविष्य का चिकित्सकीय रास्ता

कनाडा की गुलफ विश्वविद्यालय में पिछले कुछ वर्षों से शोध कर रहे वैज्ञानिकों का दावा है कि गोवंश में पाए जाने वाले रोग प्रतिरक्षकों के माध्यम से ही भविष्य की कारगर दवा एवं वेक्सीन बनेंगी। वैज्ञानिकों ने वहां चले लम्बे शोध के बाद यह निष्कर्ष निकाला है। वैज्ञानिकों का नेतृत्व विश्वविद्यालय के प्रतिरक्षी (इम्युनोलोजी) विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ आजाद कुमार कौशिक कर रहे हैं। डॉ कौशिक ने बताया कि पूरी पृथ्वी पर गाय में ही सबसे प्रभावी रोग प्रतिरोधक तत्व पाए जाते हैं। ये तत्व विभिन्न बेक्टीरिया और

भारत सरकार के अनुसार देश में देशी गाय की नस्ल	३७	
गाय या गोउत्पादों के उल्लेख वाले आयुर्वेद के प्राचीन ग्रंथ	२९	
आयुर्वेद ग्रन्थों में गोउत्पादों से सम्बंधित औषधियाँ	४५००	

वायरस से लड़ने में कारगर हैं और मानव शरीर में काम करने की क्षमता भी रखते हैं। इसी तरह के निष्कर्ष केलीफोर्निया विश्वविद्यालय और स्क्रिप्स रिसर्च इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों के हैं। वहां पिछले छह वर्ष से गोवंश में पाए जाने वाले एण्टीबॉडी पर शोध चल रहा है। इन सभी विदेशी संस्थानों में अब सारे प्रयास गोवंश के रोग प्रतिरोधक तत्वों में संशोधन करने के चल रहे हैं। गोवंश के संशोधित एण्टीबॉडी आगे चलकर कैंसर जैसी उन बीमारियों में काम आ सकते हैं, जिनमें प्रचलित पद्धतियों में इलाज सम्भव नहीं है।

यही खाद काम करेगा

अधिक उपज लेने के फेर में हम खेतों में रासायनिक खाद और कीटनाशक काम ले रहे हैं। परिणाम यह है कि यही रसायन खाद्य पदार्थों के माध्यम से मानव शरीर में जाकर कैंसर जैसे गंभीर रोगों का कारण बन रहा है। इसीलिए चिकित्सक जैविक उत्पाद ही काम लेने की सलाह देने लगे हैं। हाल फिलहाल हम भले ही इस ओर ध्यान नहीं दे रहे लेकिन समस्या बढ़ते ही हमें जैविक उत्पादों पर आना पड़ेगा। यह भी गोवंश से ही सम्भव होगा। अनेक शोधों में प्रमाणित हो चुका है कि गाय के गोबर से बना खाद सालों-साल तक भूमि को उर्वरा बनाए रखता है। गोमूत्र से बने कीटनाशक भी बहुत प्रभावी सिद्ध हुए हैं। ऐसे कुछ कीटनाशकों का तो पेटेंट भी हो चुका है।

धरती को भी गाय ही बचाएगी

दुनिया के ख्यातनाम पारिस्थितिकी विशेषज्ञ (इकोलोजिस्ट) क्लिफ्फोर्ड एलन रेडिन सेवरी ने प्रमाणित कर दिया है कि मरुस्थलीकरण को रोकने का एकमात्र तरीका गोपालन ही है। इक्यासी वर्षीय सेवरी उन विशेषज्ञों में शामिल हैं जिन्होंने पहले पशुओं को ही मरुस्थलीकरण के जिम्मेदार माना था और जिनकी सलाह पर अफ्रीकी देशों में हजारों हाथियों को मारा गया था। इससे भी समस्या जस की तस रही तो एलन ने आधुनिक सोच की जगह पीछे जाकर सोचना शुरू किया।

सेवरी ने कई प्रयोग किए और अन्त में उपाय मिला गोवंश में। वे गाय-बैलों की सहायता से हजारों बीघा भूमि को सुधार चुके हैं। उनका कहना है कि खुली छोड़ी गई गायें घास चरती हैं और फिर वहीं जमीन पर गोबर छोड़ जाती हैं जो उत्तम खाद में बदलकर जमीन को उर्वरा बना देता है। साथ ही जमीन की पानी सोख कर रखने की क्षमता भी बढ़ जाती है। एलन कुछ समय तक गायों को एक ही जगह पर रखते हैं और फिर नए स्थान पर ले जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप अब बंजर भूमि पर जंगल खड़े हो गए हैं। ❑

गोवंश की देशी नस्ल बचेगी तो हम बचेंगे

देशी नस्ल की गायें न्यूनतम पोषण एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उपयोगी सिद्ध होती हैं। चिंता की बात यह है कि भारत की प्रसिद्ध ३० नस्लों में से अधिकतर समाप्ति की कगार पर हैं। श्रेष्ठ गिर, थारपारकर, हरियाणी और साहीवाल नस्ल को भी संकरित कर समाप्ति की ओर धकेला जा रहा है। भारत सरकार के नस्ल सर्वेक्षण २०१३ के अनुसार देश में शुद्ध नस्ल की गायों का हिस्सा सिर्फ २५ प्रतिशत ही बचा है। शेष गायें संकरित हो चुकी हैं। मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए देशी गाय के महत्व को देखते हुए अब पहली प्राथमिकता देशी गायों की शुद्धता को बचाना हो गई है। गाय माता तो बचे ही, उसकी शुद्धता भी कायम रहे, इसकी व्यवस्था करनी होगी।

किस राज्य में कौन-सी देशी गाय

गिर – गुजरात,राजस्थान,मध्य प्रदेश,छत्तीसगढ़
लाल सिंधी – हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड,उत्तर प्रदेश
साहीवाल – हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश
देवनी – आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र
हरियाणी – हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश
आँगोल – आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा
गोलाव – महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश
राठी – राजस्थान, पंजाब
थारपारकर – राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश
कांकरेज – राजस्थान, गुजरात
नागोरी – राजस्थान, पंजाब
सीरी – मेघालय, सिक्किम, पश्चिम बंगाल
मालवी – राजस्थान, मध्य प्रदेश
लाल कंधारी – महाराष्ट्र, राजस्थान
बचौर – बिहार, झारखंड
डांगी – महाराष्ट्र, गुजरात
हल्लीकर – कर्नाटक, आंध्र प्रदेश
कांग्याम – केरल, तमिलनाडु
केनकथा – उत्तर प्रदेश,मध्य प्रदेश
खिल्लारी – महाराष्ट्र, कर्नाटक
बरगुर – तमिलनाडु
खैरीगढ़ – उत्तर प्रदेश
उम्बाचेरी – तमिलनाडु
कृष्णावैली – कर्नाटक
कोसाली – छत्तीसगढ़
अमृतमहल – कर्नाटक
पाँवार – उत्तर प्रदेश
वेचूरी – केरल
निमाड़ी – मध्य प्रदेश
मेवाती – उत्तर प्रदेश
पुंगानुर – आंध्र प्रदेश

गोवंश में नस्लवार हिस्सा

नस्ल	हिस्सा %
हरियाणी	४.१५
गिर	३.३८
साहीवाल	३.२३
कांकरेज	२.००
कोसाली	१.६१
खिल्लारी	१.३३
मालवी	१.१३
राठी	०.८२
थारपारकर	०.४८
आँगोल	०.४२
लालसिंधी	०.३७
नागोरी	०.३४
लालकंधारी	०.३०
निमाड़ी	०.३०

ऐसे थे अपने दीनदयाल जी

उनके व्यक्तित्व का चमत्कारी प्रभाव

उस समय पं.दीनदयाल उपाध्याय भारतीय जनसंघ के महामंत्री थे। हम जानते ही हैं कि १९७७ में भारतीय जनसंघ का जनता पार्टी में विलय हो गया और १९८० में भारतीय जनता पार्टी के नाम से जनसंघ का पुनर्जन्म हुआ।

सन् १९५७ के आम चुनावों में भारतीय जनसंघ ने उत्तर प्रदेश की सभी लोकसभा सीटों पर उम्मीदवार खड़े किये। बिजनौर में जनसंघ के सामने स्व. प्रकाशवीर शास्त्री थे। दीनदयाल जी चुनाव प्रचार के लिये घूमते हुए बिजनौर भी पहुँचे। प्रकाशवीर शास्त्री के समर्थकों ने तय कर रखा था कि जनसंघ की कोई सभा बिजनौर में नहीं होने देंगे। कार्यकर्ताओं ने दीनदयाल जी को परिस्थिति बताई तो पण्डित जी ने कहा– '' चिन्ता मत करो जनसंघ की सभा निश्तिच रूप से होगी और भाषण भी होगा।''

सभा में जैसे ही दीनदयालजी बोलने खड़े हुए तो हुल्लड़बाजी शुरु हो गई। दीनदयाल ने सभी कार्यकर्ताओं से शांत रहने को कहा और स्वयं भी शान्त भाव से ध्वनि विस्तारक हाथ से पकड़े हुए खड़े रहे। न तो उनके चेहरे पर कोई उद्विग्नता थी न वाणी में कोई उत्तेजना। माइक थामे हुए वे शांति किन्तु दृढ़ता के साथ मंच पर खड़े रहे। इसका बड़ा आश्चर्यजनक प्रभाव हुआ। कुछ ही देर में सारा शोर बन्द हो गया। अब पण्डित जी ने अपना भाषण प्रारम्भ किया।

वे ऐसे बोल रहे थे मानो कुछ हुआ ही नहीं हो। हुल्लड़बाजी का कोई उल्लेख किये बिना उन्होंने पौन घण्टे तक जनसंघ की नीतियाँ स्पष्ट कीं। हुल्लड़बाजों ने भी ध्यान से उनकी बात सुनी। यह उनके व्यक्तित्व का ही प्रभाव था कि शोर मचाने वाले अपने आप चुप हो कर बैठ गये।

– विश्वनाथ लिमये

(स्व. विश्वनाथ लिमये ने अजमेर में राजस्थान की पहली संघ शाखा शुरू की थी। बाद में वे उ.प्र. में दीनदयाल जी के साथ प्रचारक रहे)

आगामी पक्ष (१६ से ३० जून २०१७)
(आषाढ़ कृष्ण ७ से आषाढ़ शु. ७ तक)

जन्म दिवस

१८ जून (१८६१) –विश्व के महान् उपन्यास लेखक **बाबू देवकीनन्दन खत्री** का जन्म दिवस।

आषाढ़ कृ.१० (इस बार १९ जून)– इक्कीसवें तीर्थंकर पूज्य मुनि नेमिनाथ जयंती ।

२६ जून (१८३८) –राष्ट्रीय गीत **वन्देमातरम्** के जन्मदाता प्रसिद्ध उपन्यासकार बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय जयंती।

महत्वपूर्ण घटना

१८ जून (१५७६) : तीन माह तक चले हल्दीघाटी युद्ध का प्रारम्भ , युद्ध में महाराणा प्रताप विजयी हुए

१९ जून : **परावर्तन दिवस**– स्वराज्य के सेनापति नेताजी पालकर औरंगजेब के दबाव में कुली खान बने। शिवाजी महाराज ने उनकी शुद्धि कर उनकी घर–वापसी की। (१६७७)

आषाढ़ शु.२ (इस बार २५ जून) : जगन्नाथ पुरी में भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा प्रारम्भ।

२५ जून (१९७५) : इस दिन अर्द्ध रात्रि में देश में आपात काल लगाया गया।

पुण्यतिथि

१७ जून (१९९६)– संघ के तृतीय सरसंघचालक बाला साहब देवरस की पुण्यतिथि ।

आषाढ़ कृ.९ (इस बार १८ जून)– हिन्दवी स्वराज्य का स्वप्न देखने वाली शिवाजी महाराज की माता पूज्य जीजाबाई की पुण्यतिथि।

१८ जून– महाराणा प्रताप की रक्षा में झाला मान की वीरगति **(१५७६)**, ग्वालियर में अंग्रेजों से युद्ध करते हुए महारानी लक्ष्मीबाई का स्वर्गारोहण **(१८५८)**।

१९ जून (१९४२)– जोधपुर जेल में क्रांतिकारी बालमुकुन्द बिस्सा की शहादत ।

२० जून (७१२)–सिन्ध सम्राट महाराजा दाहर सेन की वीरगति।

२१ जून (१९४०)– संघ संस्थापक डा.हेडगेवार का महाप्रयाण

२३ जून (१९५३)–कश्मीर बचाओ आन्दोलन में जनसंघ के संस्थापक अध्यक्ष डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की शहादत।

२४ जून (१५६४)– विदेशी आक्रमणकारी अकबर से अपनी स्वतंत्रता की रक्षा में गढ़ कुण्डला की महारानी दुर्गावती का बलिदान।

२७ जून – महाराजा रणजीत सिंह की पुण्यतिथि (१८३९), राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रारम्भ के प्रचारक दादाराव परमार्थ की पुण्यतिथि (१९६३)।

अमन के दो ही रास्ते

वैश्विक इस्लाम से पूरी दुनिया त्रस्त है। चिंता की बात है कि मुस्लिम समाज के समझदार लोग भी जिहादी तत्वों और उन्हें प्रेरित कर रही विचारधारा के खिलाफ खड़ा होने में संकोच कर रहे हैं। इसी विषय पर वरिष्ठ पत्रकार एन के सिंह ने राजस्थान पत्रिका (८ मई) में एक लेख लिखा है। लेख के प्रमुख अंश यहां दिए जा रहे हैं:-

अगर कोई सैनिक देश के लिए जान देता है तो उसे शहीद कहते हैं पर कोई मज़हब के लिए कुर्बान होता हो तो क्या उसे आतंकवादी कहते हैं? यह सवाल केरल के याहिया का है जो अपने २१ साथियों के साथ देश छोड़ कर आईएसआईएस अफगानिस्तान में सक्रिय संगठन से जुड़ गया। हाल ही में याहिया अमरीकी सैनिकों के एक ऑपरेशन में मारा गया।

तर्क याहिया का हो या आईएसआईएस का, यह प्रदर्शित करता है किस तरह दुनिया के आतंकी संगठन अपने कुतर्कों से आज पूरी दुनिया के लिए खतरा बन गए हैं। किस तरह ये संगठन गरीब व अशिक्षित युवाओं को कुतर्क के सहारे गुमराह कर रहे हैं और उनमें एक उन्माद पैदा कर रहे हैं। आज जरूरत है कि या तो इस्लाम के वास्तविक अलमबरदार इस मज़हब के उन्माद से दुनिया को बचाने के लिए आगे आएं और इसे पुनर्परिभाषित करें या दुनिया संगठित हो कर इसका प्रतिकार करे।

याहिया को यह नहीं बताया गया कि 'मज़हब के लिए मरना और मज़हब के लिए मारना' में कितना अंतर है? और, ना ही यह कि दुनिया में खून बहाकर खलीफा का शासन (वह अवधारणा जिसे स्वयं दर्जनों इस्लामिक देश नकार चुके हैं) स्थापित करना अगर धर्म (मज़हब) है तो वह पूरी मानवता, समाज की स्थापना के मूल सिद्धांतों के खिलाफ है। उसे यह भी नहीं बताया गया कि खून बहाकर मज़हब का प्रसार एक बर्बरतापूर्ण आदिम सभ्यता का द्योतक है और इसे विश्व समाज काफी अर्से पहले खारिज कर चुका है। जब एक आतंकी मज़हब के नाम पर यह सब कुछ करता है तो वह उस देश के ही नहीं पूरे विश्व समाज और मानवता के लिए ख़तरा माना जाता है।

याहिया ने एक समाचार पत्र को भेजे गए पत्र में लिखा है ''जिहाद बाजार का एक सौदा है अल्लाह के साथ, एक ऐसा सौदा जिसमें हम अपना जीवन और पूंजी अल्लाह को देकर बदले में जन्नत हासिल करते हैं।'' कितना फायदे का सौदा है! याहिया कुरान के उस आयत (अल तौबा सूरा ९ आयत १११) को उद्घृत कर रहा था जिसमें कहा गया है, *अल्लाह ने इस्लाम में विश्वास करने वालों से उनका जीवन और उनकी संपत्ति खरीद ली है और बदले में उन्हें जन्नत देने का वादा किया है।*

पाकिस्तान के जाने-माने पत्रकार आरिफ जमाल ने अपनी किताब 'द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ जिहाद इन कश्मीर' में करीब ६०० जिहादियों के अंतिम पत्रों का अध्ययन करके लिखा कि 'शायद ही कोई पत्र हो जिसमें जिहाद में मरने के बाद इनाम स्वरूप जन्नत में मिलने वाली ७२ हूरों का जिक्र न हो।' मरते वक्त इसका उल्लेख यह बताता है कि जन्नत की हूरें उनका मुख्य आकर्षण होती हैं। शायद इस्लाम का एक कट्टर वर्ग है जो सही परिभाषा और उदार व्याख्या की जगह अपनी दूकानें चलाने के लिए पूरी दुनिया में आतंक फैलाना चाह रहा है और उधर इसका और विद्रूप चेहरा आईएसआईएस के रूप में उभरा है।

दुनिया में अमन के लिए दो ही रास्ते हैं या तो इस्लाम स्वयं इन तत्वों को खत्म करे या पूरी दुनिया एकजुट हो कर इस खतरे से लड़े। आज दुनिया को और साथ ही इस्लाम की सही शिक्षा को मानने वालों को इस नए खतरे से लड़ना होगा। ❑

एक जबर्दस्त फैसला

भारतीय मुस्लिम समाज में भी गोमांस के खिलाफ आवाज उठने लगी है। इसकी सराहना भी की जा रही है। इसी विषय पर प्रख्यात लेखक डॉ वेदप्रताप वैदिक ने नया इण्डिया (८ मई) में एक लेख लिखा है। इसके प्रमुख अंश यहां प्रस्तुत हैं:-

राष्ट्रीय मुस्लिम मंच ने इस बार एक जबर्दस्त फैसला किया है। उसके हजारों सदस्य रमजान के दिनों में जो इफ्तार करेंगे, उसमें गोमांस नहीं परोसा जाएगा। उसकी जगह रोजादारों का उपवास गोरस यानी गाय के दूध से खोला जाएगा। क्या कमाल की बात है, यह! यह बात मैं मुस्लिम देशों के कई मौलानाओं, राष्ट्रपतियों, प्रधानमंत्रियों, प्रोफेसरों और पत्रकारों से वर्षों से कहता आ रहा हूं। कुछ देशों में इसका पालन भी होने लगा है। मैं तो उनसे कहता हूं कि गाय का ही नहीं, किसी भी जानवर का गोश्त क्यों खाया जाए?

रोज़ा जैसा महान पवित्र और आध्यात्मिक कार्य आप संपन्न करें और उसके बाद अपना पेट भरने के लिए किसी जानवर को मौत के घाट उतार दें, यह अल्लाह की कौनसी इबादत हुई? यह कौनसी रहमत हुई? यह कौनसी करुणा है? यह कौनसी तपस्या है? कुरान शरीफ या बाइबिल या जेन्दावस्ता में कहां लिखा है कि मुसलमान या ईसाई या यहूदी होने के लिए गोश्त खाना जरुरी है? जो शाकाहारी हैं, वे भी क्या उत्तम मुसलमान नहीं हैं? मैं तो कहता हूं कि जो लोग आदतन गोश्तखोर हैं, उन्हें भी रमजान के पवित्र दिनों में गोश्त, शराब और शारीरिक संबंधों से परे रहना चाहिए। यदि हमारे देश के मुसलमान भाई मेरे इस निवेदन को मानने लगें तो सारी मुस्लिम दुनिया के वे सबसे बेहतरीन मुसलमान माने जाएंगे। डेढ़ हजार साल पहले अरबों की मजबूरी रही होगी कि वे मांसाहार करें लेकिन आज की दुनिया में शाकाहारी चीजें सर्वत्र सुलभ हैं। रमजान की तपस्या के दिनों में चित्त ओर पेट दोनों को शांत रखने के लिए शाकाहार से बढ़िया क्या हो सकता है? यदि भारतीय मुसलमान इस रास्ते पर चलें तो वे इस्लाम की इज्जत में चार चांद लगा देंगे। ❑

शिव ताण्डव स्तोत्र का मंत्रमुग्ध करने वाला गायन

शिव ताण्डव-स्तोत्र भगवान शिव शंकर की आराधना में गाया जाने वाला स्तोत्र है। हैरान करने वाली बात यह है कि इसकी रचना लंकापति महापण्डित रावण ने की थी। यह सिद्ध करता है कि दुष्टों के भी सद्गुणों का सम्मान करना भारत की परम्परा है। इसीलिये राक्षस होते हुए भी दानवेन्द्र बलि को आज तक महादानी के रूप में सम्मान से याद किया जाता है और अमर माना जाता है।

इस स्तोत्र में १५ श्लोक हैं और लय से श्लोकों का उच्चारण प्रभाव उत्पन्न करता है। इसीलिये कुछ फिल्मों में भी इस स्तोत्र का पाठ किया गया है। इन दिनों काफी चर्चित हुई फिल्म बाहुबली में भी शिव ताण्डव स्तोत्र है। बड़े मन से और श्रद्धा के साथ प्रभावी तरीके से इसे गाया गया है। सबसे पहले महाराणा प्रताप पर बनी फिल्म 'जय चित्तौड़' में यह स्तोत्र आया है। प्रताप के राज्याभिषेक के बाद एकलिंगनाथ के दर्शनों के समय एक पुजारी भावपूर्ण रूप से इसका पाठ करता है। यह फिल्म साठ साल पहले की श्वेत-श्याम फिल्म है। महाराणा प्रताप के जीवन पर इसके बाद कोई दर्शनीय फिल्म नहीं बनी।

पच्चीस साल पहले दूरर्शन पर प्रसारित हुए प्रसिद्ध धारावाहिक चाणक्य में भी शिव शंकर का यह स्तोत्र है। लेकिन कहीं भी पूरे १५ श्लोकों का गायन नहीं हुआ है। बाहुबली फिल्म के पहले भाग में भी मात्र चार श्लोक हैं। चारों श्लोकों का गायन अवश्य ही प्रभावोत्पादक है।

भारतीयता का प्रतिबिम्ब : बाहुबली के दूसरे भाग ने तो सफलता के नये कीर्तिमान स्थापित कर दिये हैं। फिल्म निश्चित रूप से भारतीय संस्कृति से ओत-प्रोत है। एक साफ-सुथरी, भव्य और देश की जड़ों से जुड़ी सफल फिल्म कैसी होती है, इसका यह एक ज्वलंत उदाहरण है। हॉलीवुड ने मूसा (मोजेज) और ईसा पर 'टेन कमाण्डमेण्ट्स' और 'बेन-हर' जैसी फिल्में बना दीं। इन फिल्मों की भव्यता देखते ही बनती है। बाहुबली भव्यता के मामले में दोनों से आगे है।

सम्पूर्ण रूप से भारतीय परिवेश में तथा भारतीय जीवन मूल्यों पर आधारित यह एक अद्भुत फिल्म है। बाहुबली राजकुमारी देवसेना को जब एक साथ तीन वाण धनुष से छोड़ना सिखाता है तो संस्कृत के श्लोक बोलते हुए सिखाता है। माहिष्मती की विशाल सेना के सेनापति के रूप में जब बाहुबली संस्कृत में शस्त्र उठाने व रखने की, आगे बढ़ने और रुकने की आज्ञायें देता है तो एक बार तो समय भी ठहर जाता है।

अनेक वर्षों के बाद एक विशुद्ध भारतीय फिल्म दर्शकों के लिये आई है। शिव ताण्डव स्तोत्र के मंत्रमुग्ध कर देने वाले गायन ने फिल्म में चार चाँद लगा दिये हैं। ❑

अपने देश और संस्कृति को हम कितना जानते हैं

१. श्रीराम ने एक ही वाण में ताड़ के सात वृक्षों को बींध दिया था। किसमें अपने पराक्रम का विश्वास जगाने के लिये श्रीराम ने यह किया?
२. पितामह भीष्म का बाल्यकाल का नाम क्या था?
३. किस देश की राजधानी के बाहर देवराज इन्द्र का मन्दिर बना हुआ है?
४. देश के चारों कोनों में स्थित पाँच पवित्र झीलों में से राजस्थान में कौन सी झील स्थित है?
५. भागवत महापुराण में २४ अवतारों का उल्लेख है। आठवें अवतार प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव हैं। नौंवे अवतार कौन हैं?
६. राय हरिहर के बाद विजयनगर साम्राज्य के शासक कौन बने?
७. केल्कुलस अर्थात् अवकलन गणित के जन्मदाता भारतीय गणितज्ञ कौन हैं?
८. पूना के अत्याचारी कमिश्नर चार्ल्स रैण्ड को मृत्युदण्ड किन देशभक्तों ने दिया?
९. बृज प्रदेश (अलवर-भरतपुर) में मुगलों के विरुद्ध सशस्त्र क्रांति का नेतृत्व किस वीर योद्धा ने किया था?
१०. जिस कुएं से नौ स्वादों वाला पानी निकलता है, वह कहाँ स्थित है? *(उत्तर इसी अंक में है)*

पंचांग- आषाढ़ (कृष्ण पक्ष)

युगाब्द-५११९, विक्रमी-२०७४, शाके-१९३९
(१० जून से २४ जून २०१७ तक)

चतुर्थी - १३ जून, **योगिनी एकादशी**- २० जून- **पितृकार्य अमावस्या**, - २३ जून, **आषाढ़ी-शनैश्चरी-देवकार्य अमावस्या**- २४ जून, **पंचक**- १५ जून प्रातः ४.२८ बजे से १९ जून सायं ५.२६ बजे तक ।

ग्रहों की स्थिति

आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष में **वक्री शनि, बृहस्पति, राहु** तथा **केतु** पूर्ववत् क्रमशः धनु, कन्या, सिंह तथा कुम्भ राशि में ही रहेंगे। इसी प्रकार **मंगल** तथा **शुक्र** भी पूर्ववत् क्रमशः मिथुन तथा मेष राशि में स्थित रहेंगे। इस पक्ष में सूर्य की मिथुन संक्रान्ति है अर्थात् १५ जून को प्रातः ५.३३ बजे **सूर्य** वृष से मिथुन राशि में में प्रवेश करेंगे। **बुध** भी १८ जून को रात्रि १०.५१ बजे वृष में मिथुन में आयेंगे।

चन्द्रमा : १० से १२ जून तक **धनु**, १३-१४ को **मकर**, १५ से १७ जून तक **कुम्भ**, १८-१९ को **मीन**, २०-२१ को **मेष**, २२-२३ को उच्च की राशि **वृष** तथा २४ जून को **मिथुन** राशि में गोचर करेंगे।

स्वावलम्बन की सीख

सत्यदेव परिव्राजक अमरीका के एक शहर में सड़क पर चले जा रहे थे। तभी अचानक एक किशोर ने उनके पास आकर पूछा– *''श्रीमान्! क्या आप अखबार खरीदेंगे?''*

उन्होंने कहा– *''नहीं बेटा! मुझे आवश्यकता नहीं है, परन्तु यह बताओ कि तुम्हें इतनी कम उम्र में अखबार बेचने का यह काम किस मजबूरी में करना पड़ रहा है? क्या तुम्हारे माता-पिता नहीं हैं?''*

बालक ने स्वाभिमान के साथ उत्तर दिया– *''पहले अखबार खरीदिए, फिर कारण सुनिए।''*

सत्यदेव जी ने करुणावश अखबार खरीद लिया और कहा– *''अब बताओ।''*

किशोर ने बताया– *''श्रीमान! मेरे माता-पिता जीवित हैं और सम्पन्न हैं। वे मेरा पालन-पोषण बहुत ही अच्छी तरह से करते हैं, लेकिन उनकी सम्पत्ति पर निर्भर रह कर मैं अपने आप को पंगु नहीं बनाना चाहता। स्वावलम्बन से जीना हमारे यहां बचपन से सिखाया जाता है। मैं वही कर रहा हूँ।''*

बाल-प्रश्नोत्तरी

बाल मित्रो! यहाँ पर महाभारत से संबंधित दस प्रश्न दिये गये हैं। प्रश्नों के उत्तर चार विकल्पों में दिये गये हैं जिनमें से एक उत्तर सही है। इस उत्तर को ढूंढ़ो और अपने सामान्य ज्ञान की परीक्षा लो।

१. परीक्षित किस का पुत्र था?
(अ) अर्जुन (ब) अभिमन्यु (स) नकुल (द) सहदेव

२. कर्ण ने अपने कुण्डल एवं कवच किसे दान में दिये?
(अ) इन्द्र (ब) सूर्य (स) वरुण (द) बृहस्पति

३. धृतराष्ट्र ने आलिंगन करके किसकी लौह प्रतिमा को चूर-चूर कर दिया?
(अ) अर्जुन (ब) भीम (स) युधिष्ठिर (द) विराट राज

४. महाभारत युद्ध के पश्चात् श्रीकृष्ण ने द्वारिका में कितने वर्ष राज्य किया?
(अ) १२ (ब) २४ (स) ३६ (द) एक भी नहीं

५. युधिष्ठिर के स्वर्ग जाते समय उसके साथ कौन था?
(अ) द्रोपदी (ब) अर्जुन (स) भीम (द) कुत्ता

६. अजात शत्रु किस पाण्डव को कहा जाता है?
(अ) युधिष्ठिर (ब) अर्जुन (स) भीम (द) नकुल

७. इन्द्र के हाथी का नाम क्या है?
(अ) वीरावत (ब) ऐरावत (स) सहरावत (द) वारणावत

८. जुए में हारने के बाद पाण्डवों को कितने वर्ष का वनवास व अज्ञातवास भोगना पड़ा?
(अ) ११ (ब) १२ (स) १३ (द) १४

९. धनंजय किस पाण्डव का नाम है?
(अ) भीम (ब) अर्जुन (स) नकुल (द) सहदेव

१०. कुन्ती किसकी पत्नी थी?
(अ) पाण्डु (ब) धृतराष्ट्र (स) उग्रसेन (द) विचित्रवीर्य

(उत्तर इसी अंक में है)

भारत की विज्ञान परम्परा

❑ डा. ऋषि कुमार सिंहल

भास्कर, कणादऋषि, आर्यभट्ट
जगदीश बोस, सत्येन्द्र नाथ।
भारत में जन्मे विश्व गुरु,
विज्ञान धरोहर लिए साथ।

सुश्रुत गुरु, चरक, प्रफुल्ल चंद्र,
ने दिया विश्व को दिव्य ज्ञान।
उज्ज्वल हैं जिनकी परंपरा,
गुंजित उनका 'दर्शन' महान।

कण द्वय प्रकृति, सापेक्षिकता,
या कायनात के हों रहस्य।
परमाणु, प्रकाश, द्रव्य, ऊर्जा,
रवि, चंद्र, धरा, के सभी तथ्य।

पौधों में जीवन या कि समय-
विस्फारण के हों जटिल तथ्य।
दर्शन-जीवन-विज्ञान समन्वय,
पर थी उनकी दृष्टि दिव्य।।

नागार्जुन, ऋषिवर कपिलमुनि,
ऋषि पाराशर, भाभा, कलाम।
साहनी, साहा और ब्रह्मगुप्त,
मेधा के शिखरों को प्रणाम।।

रामानुज, रमन, चंद्रशेखर,
के शोधों ने इतिहास रचे।
था शून्य इन्हीं की अतुल देन,
जिसने अंकों में अर्थ भरे।।

भारत की दिव्य मनीषा को,
करते हैं हम शत कोटि नमन।
आधुनिक भौतिकी के शोधों में
प्रासंगिक उनका हर चिंतन।।

जारी है हिन्दुओं को जाति के आधार पर बांटने का षड़यंत्र

प्रख्यात पत्रकार तथा पूर्व सांसद बलबीर पुंज १२ मई को जयपुर में थे। उन्होंने 'विश्व संवाद केन्द्र' की ओर से आयोजित नारद जयंती एवं पत्रकार सम्मान समारोह को सम्बोधित करते हुए बताया कि पिछले कई दशक से भारत को अपनी आत्मा से काटने का षड़यंत्र चल रहा है। उनके उद्‌बोधन के प्रमुख अंश यहां दिए जा रहे हैं :-

पत्रकार को बहुत अध्ययन करना चाहिए। उसे सभी के साथ सम्बन्ध रखने चाहिए लेकिन मित्रता किसी से नहीं करनी चाहिए। पत्रकार मित्रता रखता है तो सिर्फ सत्य के साथ। पत्रकार को अहंकार नहीं करना चाहिए क्योंकि अहंकार करने से गलती होने की आशंका रहती है। ऑडिट ब्यूरो ऑफ सर्कुलेशन की वर्ष २०१६ की रपट के अनुसार भारत में रोज अखबारों की ६ करोड़ ३८ लाख प्रतियां प्रकाशित हो रही हैं। प्रसार संख्या के हिसाब से पहले दस समाचार पत्रों में चार हिन्दीभाषी हैं। देश में १६०० सैटेलाइट चैनल हैं जिनमें से ४०० समाचार चैनल हैं।

मीडिया की स्थिति

मीडिया के मूलत: तीन काम होते हैं। पहला सूचना देना अर्थात समाचार, दूसरा-उस समाचार के बारे में पाठक या श्रोता को शिक्षित करना। तीसरा-मनोरंजन। अखबारों और चैनलों में इस तीसरे काम पर ही ज्यादा जोर है। मीडिया पक्षपाती (बायस्ड) भी है।

मैं आपके सामने चार समाचारों की चर्चा करूंगा जिनमें दो अभी हाल के हैं। एक साल भर पुराना है और एक लगभग सौ वर्ष पुराना है। इन दिनों सहारनपुर की घटना को लेकर समाचार छप रहे हैं। वहां दलितों और ठाकुरों में विवाद चल रहा है। **हिन्दुस्तान टाइम्स** में छपी एक रपट में लिखा गया कि झगड़ा इसलिए हुआ कि दलितों ने राजपूतों के 'नायक' महाराणा प्रताप की जयंती का विरोध किया। महाराणा प्रताप का परिचय हो गया-राजपूतों के 'हीरो'। क्या हम महाराणा प्रताप को जाति की परिधि में बांध सकते हैं? क्षेत्र की परिधि में बांध सकते हैं? पिछले सवा सौ साल से देश में यही षड़यंत्र चल रहा है। जाति के नाम पर हिन्दुओं को बांटना और मजहब के नाम पर मुसलमानों को इकट्ठा करना। महाराणा प्रताप तो हर देशभक्त की धड़कन हैं। प्रताप और शिवाजी पूरे देश के महापुरुष हैं।

मैं इस बात पर विश्वास करता हूँ, मानता हूँ कि अगर महाराणा प्रताप नहीं रहे होते, शिवाजी महाराज नहीं रहे होते, गुरु गोविन्द सिंह नहीं रहे होते, इस परम्परा के और वीर नहीं रहे होते और इन्होंने मुगलों के खिलाफ तलवार नहीं उठाई होती तो मैं बलबीर पुंज नहीं होता। कोई न कोई खान होता और भारत, भारत नहीं होता, पाकिस्तान या अफगानिस्तान जैसा होता। तलवार के बल पर जब इस देश के लोगों को मजहब बदलने को मजबूर किया जा रहा था तब इस परम्परा के महापुरुषों ने इस देश की सनातन शाश्वत परम्परा को जीवित रखा। इसी कारण इस देश में लोकतंत्र है और देश में पंथ निरपेक्षता जिंदा है।

सब मौन हैं- दूसरी खबर चीन की है। चीन में एक प्रांत है-जिनजियांग। ये चीन का मुस्लिम बहुल प्रांत है। इस प्रांत में २ करोड़ तीस लाख मुसलमान निवास करते हैं। हाल ही में जो चीन ने किया वह दुनिया में किसी देश की सरकार ने कभी नहीं किया। चीन ने मोहम्मद, सद्‌दाम, गद्‌दाफी, मक्का, मदीना जैसे नाम रखने पर पाबंदी लगा दी। इससे पहले चीन ने बुर्के, हिजाब, गोल टोपी और सार्वजनिक जगह पर रमजान पर भी पाबंदी लगाई थी। इजराईल में दो फिलिस्तीनी मारे जाएं तो भारत में प्रदर्शन हो जाते हैं। अमरीका में किसी व्यक्ति की दाढ़ी खींचने की घटना हो जाए तो हमारे वामपंथी शोर मचाने लगते हैं। चीन में इतना बड़ा घटनाक्रम हो गया लेकिन किसी चैनल में एक डिबेट तक नहीं दिखी। भारत में कोई अखलाक मर जाए तो पूरी दुनिया में शोर हो जाता है, अवार्ड वापस किए जाते हैं, पर चीन की घटना पर सब मौन हैं।

हैफा की मुक्ति

तीसरी बात दिल्ली के तीनमूर्ति भवन की है। यह कभी अंग्रेज सेनाध्यक्ष का आधिकारिक निवास हुआ करता था। आजादी के बाद जवाहर लाल नेहरू उसमें रहते थे। उनके बाद इसे म्यूजियम बना दिया गया। तीनमूर्ति हाउस के सामने गोल चक्कर में तीन सैनिकों के पुतले हैं जिनके हाथों में भाले हैं। इनका राजस्थान से भी सम्बंध है लेकिन राजस्थानियों को तो क्या, दिल्ली वालों को भी इसकी जानकारी नहीं है।

द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था। एक तरफ अंग्रेजों की सेना थी। दूसरी तरफ जर्मन और तुर्की सेना। भारतीय रियासतों ने भी अपनी सेना अंग्रेजों की तरफ से लड़ने के लिए भेजी। जर्मन और तुर्की सेना ने इजरायल के हैफा बन्दरगाह पर कब्जा कर रखा था। वहां अंग्रेजों की ओर से लड़ने के लिए हैदराबाद, मैसूर और जोधपुर की सेना भेजी गई। इस रियासती सेना में तलवार, भाले लिए घुड़सवारों की सैन्य टुकड़ियां थीं। यह १५ कैवलरी कहलाई। जोधपुर और मैसूर की सेना को हैफा विजय करने के लिए रवाना किया गया। बाद में ब्रिटिश अधिकारियों को भान हुआ कि सामने जर्मन सेना के पास मशीनगन और बंदूकें हैं, इसलिए उन्होंने जोधपुर एवं मैसूर की सेना को रुकने एवं वापस लौटने का आदेश दिया। जोधपुर एवं मैसूर के सेनापतियों ने कहा कि एक बार रवाना होने के बाद वापस लौटना हमारी परम्परा नहीं है। अब या तो हम उन्हें हराकर लौटेंगे या युद्ध करते हुए वीरगति प्राप्त करेंगे। रियासती सेना के नो सौ सैनिक शहीद हो गए लेकिन शेष रहे सैनिकों ने हैफा पर कब्जा कर लिया और १३०० शत्रुसैनिक बंदी भी बना लिए।

तलवार-भाले वाले सैनिकों द्वारा मशीनगनों से लैस सैनिकों पर विजय पाने की यह बड़ी और अभूतपूर्व घटना थी इसलिए अंग्रेजों ने उनकी याद में दिल्ली स्थित इस भवन का नाम तीनमूर्ति हाउस

पूज्य रविनाथ जी महाराज का देवलोक गमन

हरमाड़ा नाथ आश्रम के प्रमुख पूज्य रविनाथ जी महाराज ने गत १५ मई को रात्रि ११.३५ बजे अपनी जीवन यात्रा पूरी की। १६ मई को आश्रम परिसर में ही उन्हें समाधि दी गई।

योगी रविनाथ जी का जन्म आषाढ़ शु. ११ विक्रमी १९८६(१७ जुलाई १९२९) के दिन जयपुर जिले के बिशनपुरा ग्राम में हुआ था। गाँव के ही जमना लाल बजाज विद्यालय में उनकी प्राथमिक शिक्षा हुई। रामगढ़ शेखावाटी से उन्होंने उच्च माध्यमिक शिक्षा ली तथा उसके बाद शिक्षक हो गये। शिक्षक रहते हुए वे श्रद्धानाथ जी महाराज के सम्पर्क में आये। उसके बाद उनका जीवन बदल गया और उनका अधिकाधिक समय साधना में निकलने लगा। विक्रमी २०२४ (सन् १९६७) की शरद पूर्णिमा के दिन योगी शुभनाथ जी ने उन्हें दीक्षा दी।

आदि योगी गुरु गोरखनाथ

सन्यास लेने के बाद कुछ समय तक वे सरगोठ में आश्रम बना कर रहे और फिर पद-यात्राओं के माध्यम से जन-जागरण में लग गये। सत्रह वर्षों तक देश-भ्रमण के पश्चात् १९८५ में योगी रविनाथ जी जयपुर के पास सीकर रोड पर स्थित हरमाड़ा आश्रम में आ गये। तब से उनका अधिकांश समय यहीं निकला। गत दो वर्षों से वे अस्वस्थ चल रहे थे।

२७ मई को हरमाड़ा आश्रम में उनको श्रद्धांजलि देने हेतु एक सभा आयोजित की गई। प्रमुख पूजनीय संतों के साथ-साथ रा.स्व.संघ की कार्यकारिणी के सदस्य श्री हस्तीमल तथा भाजपा के डा.महेश चन्द्र शर्मा ने भी दिवंगत रविनाथ जी महाराज को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

श्रद्धांजलि सभा के पश्चात् योगी भावनाथ का उनके उत्तराधिकारी के रूप में अभिषेक किया गया।

रखा और सैनिकों के पुतले स्थापित किए। हैफा में २२ सितम्बर से २५ सितम्बर तक हर वर्ष कार्यक्रम आयोजित होते हैं और वहां इस लड़ाई को याद किया जाता है। वहां की पाठ्यपुस्तकों में इसके पाठ शामिल हैं लेकिन हमने यहां अपने सैनिकों के शौर्य को भुला दिया। मीडिया को भी यह बताने की जरूरत नहीं लगती।

झूठ और केवल झूठ

चौथी घटना पिछले वर्ष की है। रोहित वेमुला नाम के एक छात्र ने आत्महत्या की और मीडिया ने पूरी दुनिया में दलित उत्पीड़न का भ्रामक चित्र प्रस्तुत किया गया। एक पत्रिका ने वेमुला की मौत पर विशेषांक निकाल कर पन्द्रह लेख छापे पर उसमें कहीं भी उसके सुसाइड नोट का जिक्र नहीं था। आत्महत्या करने वाले व्यक्ति के सम्बंध में सबसे प्रामाणिक जानकारी सुसाइड नोट से ही मिलती है। अन्य समाचार पत्रों में भी सुसाइड नोट का विवरण नहीं था। मैंने हैदराबाद से नोट मंगवाया। उसे पढ़ा तो पता चला कि रोहित जिस साम्यवादी विचारधारा में विश्वास रखता था उससे उसे निराशा थी। उसे 'स्टूडेण्ट फेडरेशन ऑफ इण्डिया' से निराशा थी कि इन लोगों ने उसका उपयोग किया। उसे लगता था कि इस विचारधारा से उसका जीवन व्यर्थ हो गया। इससे दुखी होकर सुसाइड नोट में उसने लिखा 'मेरे शरीर और आत्मा में कोई सम्बंध नहीं बचा।' लेकिन यह सच्चाई सामने नहीं आए इसका पक्षपाती मीडिया में पूरा प्रबंध किया गया।

इन चारों घटनाओं का उल्लेख इसलिए किया क्योंकि रोज तथ्यों को तोड़मरोड़ कर या छिपा कर भारत की छवि को धूमिल करने का षड़यंत्र चल रहा है।

ऐसा हुआ क्यों। इसके पीछे लम्बा इतिहास है। ११९३ में एक घटना हुई। हजार साल पहले की बात है। बख्तियार खिलजी एक गिरोह लेकर आया और ८०० साल पुरानी नालंदा विश्वविद्यालय को नष्ट कर दिया। वहां दो हजार प्राध्यापक और बीस हजार विद्यार्थी थे। वहां खगोलशास्त्र, गणित, चिकित्सा आदि ६० विषय पढ़ाए जाते थे।

सम्पूर्ण ज्ञान नष्ट किया

बख्तियार ने शिक्षकों को मार दिया और विश्वविद्यालय को जला दिया। उसने बहुत बड़ी लाइब्रेरी देखी तो पूछा, ये क्या है। उत्तर मिला कि इसमें इल्म है। खिलजी ने कहा कि इल्म तो कुरान में है। वही इल्म इन किताबों में है तो इतनी पुस्तकों की क्या जरूरत है और यदि इनमें वो इल्म है जो कुरान में नहीं है तो यह कुफ्र है। कुफ्र को बर्दाश्त नहीं करना चाहिए इसलिए इन्हें जला दो। आठ महीने तक उसके सैनिक खाना बनाते समय लाइब्रेरी से पुस्तकें निकालकर ईंधन के रूप में उनको जलाते रहे।

इसके बाद वे विक्रमशिला गए, उदयगिरि गए और इन शिक्षा केन्द्रों को भी जला दिया गया। इसके बाद हम आठ सौ साल तक स्वयं को बचाने के संघर्ष में ही उलझे रहे। एक भी विश्वविद्यालय नहीं खड़ा कर पाए। वर्ष ११९३ में हमारी विश्वविद्यालय जलाई गईं और उसी शताब्दी में ऑक्सफोर्ड एवं कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयों की नींव रखी गई जिसके आधार पर इंगलैण्ड और यूरोप आज यहां तक पहुंचे हैं।

अंग्रेजों ने बाद में यहां विश्वविद्यालय खोली क्योंकि उनको अपना राज चलाना था। उन्होंने हमें वो पहचान दी जो उनकी साम्राज्यवादी नीति के अनुरूप थी। आज हम जिस पहचान को ढो रहे हैं वह अंग्रेजों के द्वारा थोपी गई है। इसलिए आज कोई भी प्रताप को एक जाति का नायक बना देता है और वेमुला जैसे प्रकरण होते हैं। ❑

पुण्यतिथि आषाढ़ कृ.९ (इस बार १८ जून) पर विशेष

मुझे भारत माता के कष्ट मिटाने वाला पुत्र दो

जीजाबाई अपने महल में बैठी हुईं थी। उसी समय किलेदार विश्वासराव ने उनके कक्ष में प्रवेश किया।

'' कहो विश्वासराव जी, कैसे आना हुआ?''

विश्वासराव की नजरें नीचीं थीं, चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रहीं थीं। उन्होंने कुछ कहने का प्रयत्न किया, किन्तु कुछ बोल नहीं पा रहे थे।

जीजाबाई समझ गईं कि कोई अशुभ समाचार है। विश्वास राव को ढाढस बंधाते हुए वे बोलीं–

'' कह डालो विश्वास जी, हमें अब अशुभ समाचार सुनने की आदत हो गई है।''

विश्वासराव राव की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। रुंधे गले से वह कहने लगे–

'' आपके पिताश्री लखु जी और दो भ्राताओं की निजाम ने हत्या कर दी है।''

लखु जी जाधव और उनके दो पुत्र रक्षाबन्धन के दिन हैदराबाद के निजामशाह के दरबार में गये थे। निजाम उनके आने पर उनका अभिवादन स्वीकार किये बिना ही दरबार से उठ कर चला गया। लखु जी कुछ समझते उसके पहले ही मुकबर खान, सफदर खान और हमीद खान ने पीछे से तीनों पर वार कर भरे दरबार में उनकी हत्या कर दी।

जीजाबाई के शोक का कोई पार नहीं था। रक्षाबन्धन के पावन पर्व पर दो भाइयों और पिता की धोखे से हत्या कर दी गई थी। मानो उन पर पहाड़ ही टूट पड़ा।

कुछ समय पश्चात् शाह जी राजे महल में आये। शोक में डूबी जीजाबाई के पास जा कर उन्होंने धीरज बंधाने का प्रयत्न किया–

'' आप धैर्य धारण करें। आपकी वेदना को हम भली प्रकार समझते हैं, परन्तु क्या करें? चारों तरफ यही निजामशाही, आदिलशाही, कुतुबशाही, मुगलशाही। कहाँ जायें, क्या करें, कुछ समझ में नहीं आता। मन तो हमारा भी स्वराज्य के लिये तलवार उठाने का होता है, लेकिन...''

'' लेकिन क्या महाराज, हर दिन विधर्मियों के अत्याचारों के समाचार मिलते हैं। किसी का मान–सम्मान,जान–माल सुरक्षित नहीं है। हमारी बहू–बेटियों को दुष्ट म्लेच्छ उठा ले जाते हैं, हर दिन मंदिरों का विध्वंस होता है। इन विधर्मियों के शासन में आजादी से सांस लेना भी मुश्किल होता जा रहा है। मेरी विधवा हुई भाभियों की सौगंन्ध, मैं चाहती हूँ मेरी कोख का लाल इन सबका बदला ले, विदेशियों के शासन के कलंक को धो डाले।''

शाह जी राजे मौन हो कर कुछ सोचने लगे। इस पर जीजाबाई ने फिर कहा–

'' महाराज आप शूर है, साहसी हैं,पर आपका शौर्य और साहस देश पर अत्याचार कर रहे म्लेच्छों के काम आ रहा है। ऐसे कितने ही शूर–वीर निजाम, आदिलशाह और मुगलों की शक्ति बढ़ाने में अपनी वीरता का उपयोग कर रहे हैं। अगर ये सभी एक हो जायें तो ...''

जीजाबाई की बात सुन कर शाह जी विचारों के भँवर में डूब गये। अपने श्वसुर एवं दो सालों की कायरतापूर्ण हत्या ने उन्हें भी हिला दिया था।

'' ठीक है हम प्रयत्न करते हैं'', कह कर वे कक्ष से चले गये।

शाह जी राजे ने स्वतंत्रता का शंखनाद कर भी दिया। पूना को केन्द्र बना कर उन्होंने 'हिन्दवी स्वराज्य' की घोषणा कर दी। जीजाबाई उस समय गर्भवती थीं, अत: सुरक्षा की दृष्टि से शाहजी ने उन्हें दुर्गम शिवनेरी दुर्ग भेज दिया।

उधर शाहजी की **स्वराज्य** की घोषणा से सभी विदेशी हमलावरों को भवें टेढ़ी हो गईं। बीजापुर के आदिलशाह ने तुरंत खवास खान को एक विशाल सेना के साथ पूना पर चढ़ाई का हुक्म दिया। कई गुना बड़ी सेना के सामने शाहजी की छोटी सी सेना टिक नहीं पाई। खवास खान ने पूना का विध्वंस कर दिया।

शाह जी राजे ने मुगलों से संधि कर ली। शाहजी जैसे योद्धा के साथ आने से दक्षिण में अब मुगल काफी ताकतवर हो गये।

जीजाबाई शिवनेरी के दुर्ग में ही थीं। स्वराज्य की असफलता के समाचार उन्हें मिल गये थे। उसी समय वे दुर्ग में स्थित शिवाई देवी के मन्दिर में पहुँच गईं। देवी माँ की पूजा–अर्चना के बाद हाथ जोड़ कर वे प्रार्थना करने लगीं,

'' हे देवी माँ, मुझे ऐसा पुत्र देना जो भारत–जननी के कष्टों को धो डाले। उसके हाथ–पैरों में पड़ी बेड़ियों को तोड़ दे। विधर्मियों के अत्याचारों में पिस रहे देश–बान्धवों को कष्टों से मुक्ति दिला सके।''

शिवाई माता ने जीजाबाई की मनोकामना पूरी की। फाल्गुन कृ.३ युगाब्द ४७३२, वि. १६८६ (१९ फर.१६३०) के शुभ दिन जीजा माता की कोख से एक तेजस्वी बालक का जन्म हुआ। शिवाई माता के नाम पर बालक का नाम शिवा रखा गया। माता ने उन्हें ऐसे संस्कार दिये कि शिवाजी ने 'हिन्दवी स्वराज्य' की स्थापना कर माँ भारती के कष्टों को दूर किया।

माता हो तो जीजाबाई जैसी और पुत्र हो तो शिवाजी जैसा। ❑

केरल में फिर मार्क्सवादी हिंसा

केरल के कन्नूर में १२ मई को संघ के एक और कार्यकर्ता की निर्दयता से हत्या कर दी गई। कक्कमपाड़ा के मण्डल कार्यवाह चूरक्काडू बीजू कम्यूनिस्ट पार्टी का गढ़ माने जाने वाले पय्यानूर गांव से गुजर रहे थे, तभी पीछे से आई एक कार ने उनकी मोटरसाइकिल को टक्कर मार कर उन्हें गिरा दिया। फिर कार से निकले गुंडों ने तलवारों से गोद कर उनकी हत्या कर दी। इस हत्या ने अपने विरोधी विचारों के लिए काम करने वाले लोगों की हत्या के कम्यूनिस्ट संगठनों के षड़यंत्र को एक बार फिर उजागर किया है।

बीजू को पहले से जान का खतरा था इसलिए उन्हें पुलिस सुरक्षा उपलब्ध करवाई गई थी, लेकिन इस हत्या से एक सप्ताह पहले ही अज्ञात कारणों से सुरक्षा हटा ली गई। ये अज्ञात कारण अब षड़यंत्र की ओर इशारा कर रहे हैं।

कन्नूर का इलाका कई दशक से कम्यूनिस्टों का गढ़ रहा है। स्थिति यह है कि अधिकतर गांवों के बाहर 'यह कम्यूनिस्ट गांव है' के बोर्ड लगे हैं। यह परोक्ष धमकी है कि अन्य विचारों के लोग यहां नहीं जा सकते। पिछले कुछ वर्षों में इस इलाके में संघ का कार्य भी बढ़ा है और यही वाममार्गी संगठनों को पसन्द नहीं आ रहा। वे नियोजित ढंग से संघ और संघ से जुड़े संगठनों के कार्यकर्ताओं की हत्या कर रहे हैं।

यही नहीं, हिंसा करने के बाद कामरेड जश्न भी मनाते हैं। केरल में भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष के. राजशेखरन ने ऐसे ही एक जश्न का वीडियो सोशल मीडिया पर पोस्ट किया है। उन्होंने दावा किया है कि माकपा के कार्यकर्ताओं ने राज्य में कम से कम १४ स्थानों पर संघ के उक्त कार्यकर्ता की हत्या का उत्सव मनाया।

घटना के दो सप्ताह बाद भी पुलिस इस घटना में लिप्त सभी अपराधियों को गिरफ्तार नहीं कर पाई है। पुलिस की ढ़िलाई के कारण तीन अभियुक्त विदेश भाग गए हैं और पुलिस सिर्फ चार अभियुक्तों को ही पकड़ पाई है। गिरफ्तार किया गया के. अनूप साम्यवादी छात्र संगठन डीवाईएफआई का ब्लॉक कोषाध्यक्ष है और शेष तीन इसी संगठन के कार्यकर्ता हैं। संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख मनमोहन वैद्य ने पुलिस से कठोर कार्रवाई की मांग की है।

जर्मनी में महिलाएं नहीं पहन सकेंगी बुर्का

अन्य यूरोपीय देशों की तरह जर्मनी ने भी महिलाओं के बुर्का पहनने पर रोक लगा दी है। सुरक्षा कारणों से यह निर्णय किया गया है। इससे पूर्व फ्रांस वर्ष २०११ में और बुल्गेरिया सितम्बर २०१६ में सार्वजनिक स्थानों पर बुर्का पहनने पर रोक लगा चुके हैं। जर्मनी में भी लम्बे समय से फ्रांस की ही तरह सार्वजनिक स्थानों पर बुर्के पर रोक की मांग हो रही थी पर जर्मनी अभी सिर्फ सरकारी कर्मचारियों पर ही बुर्के सम्बंधी रोक लगाने की हिम्मत जुटा पाया है। स्विट्जरलैण्ड में भी बुर्के पर रोक की मांग जोर पकड़ रही है। इस देश के सबसे अधिक आबादी वाले केंटन (राज्य)के जनसुरक्षा विभाग ने सार्वजनिक स्थानों पर कुरान के वितरण पर रोक लगा दी। 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' के ०७ मई के अंक के अनुसार जनसुरक्षा विभाग का मानना है कि इसकी आड़ में कट्टरपंथी विचारों को बढ़ावा दिया जा रहा है। विभाग के अनुसार यह अभियान चलाने वाले लोगों के दाएश (इस्लामिक स्टेट) से सम्बंध है।

ऑस्ट्रिया में भी रोक–ऑस्ट्रिया की संसद ने भी १६ मई को कानून बनाकर सार्वजनिक स्थानों पर बुर्का पहनने पर रोक लगा दी। दोषी पाए जाने पर जुर्माने का प्रावधान किया गया है। वहां रहने वाले मुसलमानों को अब आवश्यक रूप से स्थानीय भाषा भी सीखनी पड़ेगी।

उत्तर संस्कृति प्रश्नोत्तरी - सुग्रीव, देवव्रत, जापान, पुष्कर, सम्राट पृथु, बुक्काराय, भास्कराचार्य, दामोदर तथा बालकृष्ण चाफेकर, जाट वीर गोकला, वैशाली (बिहार)।

उत्तर बाल प्रश्नोत्तरी–१(ब),२(अ), ३(ब), ४(द), ५(द), ६(अ), ७(ब), ८(स), ९(ब), १०(अ)

नक्सलियों की समानान्तर सरकार

देश के कई हिस्सों में नक्सली गिरोह भाकपा 'माओवादी' अपनी समानान्तर सरकार चला रहा है। नक्सल प्रभावित इलाकों में पंचायत जोड़कर सुनवाई करना और फिर मनमाने तरीके से हत्या तक की सजा सुना देना आम बात हो गई है। हाल ही में इस गिरोह ने उस राष्ट्रवादी संगठन के पदाधिकारियों के नाम कथित डेथ वारण्ट जारी किया है जिसने नक्सलियों के साईं बाबा, नन्दिता दास जैसे कुछ शहरी समर्थकों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू की है।

लीगल राइट्स ऑबजर्वेट्री के संयोजक, महासचिव, सचिव और प्रवक्ता के खिलाफ जारी इस डेथ वारण्ट में कहा गया है कि भाकपा 'माओवादी' की बस्तर की केन्द्रीय जन अदालत में नौ दिन तक मुकदमा चलाया गया और फिर सजा सुनाई गई है। कथित डेथ वारण्ट में कहा गया है कि लीगल राइट्स ऑबजर्वेट्री के इन पदाधिकारियों को ३१ मई २०१७ तक जन अदालत में पेश होने का सम्मन भेजा गया है। ये पेश नहीं हुए तो डेथ वारण्ट अमल में लाया जाएगा।

पत्थरबाजों को नियंत्रित करने वाले

मेजर गोगोई को थल सेनाध्यक्ष ने सम्मानित किया

एक उत्पाती को जीप के आगे बाँध कर पत्थरबाजों पर लगाम कसने वाले भारतीय थलसेना के मेजर लीतुल गोगोई को सेनाध्यक्ष की ओर से शाबाशी दी गई है।

बीते ९ अप्रेल को जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर लोकसभा क्षेत्र में उप-चुनाव हो रहा था। चुनाव कार्य में लगे सेना व अन्य सुरक्षा बलों के जवानों पर उपद्रवी पत्थर फेंक रहे थे। जवानों को थप्पड़ मारते और गालियाँ देते उत्पातियों को कई दूरदर्शन चैनलों ने दिखाया भी था। चुनाव ठीक से सम्पन्न कराने के लिये जाने वाले जवानों पर पत्थर न फेंके जायें इसके लिये मेजर गोगोई ने बड़गाम क्षेत्र में एक उपाय किया। उन्होंने एक राष्ट्रद्रोही उत्पाती को जीप के आगे के हिस्से पर बाँध दिया। मेजर गोगोई का उपाय इतना सफल रहा कि सभी लोग अपने नियत स्थानों पर पहुँच गये और एक भी पत्थर कहीं से नहीं आया।

जीप से बँधे उत्पाती का फोटो समाचार पत्रों में छपा तो सेकुलरवादियों ने आसमान सर पर उठा लिया। मानव अधिकारों के हिमायती भी बिलों से बाहर निकल आये। उधर जम्मू-कश्मीर की पुलिस ने मेजर के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर ली। सेना ने भी १५ अप्रेल को सैनिक न्यायालय में मामले की सुनवाई की और मेजर गोगोई को निर्दोष पाया। बीती २२ मई को थल सेनाध्यक्ष जनरल रावत ने उन्हें प्रशस्ति पत्र दे कर सम्मानित किया।

मेजर गोगोई के सम्मान पर सेकुलरवादी फिर भड़क उठे। इसी बीच अभिनेता और सांसद श्री परेश रावल ने लेखिका अरुन्धती रॉय पर एक टिप्पणी कर दी। इसने आग में घी का काम किया। बताया जाता है कि अरुन्धती ने एक पाकिस्तानी चैनल को कहा कि भारत सात क्या सत्तर लाख सेना भी कश्मीर में लगा दे तो भी आतंकवाद को काबू में नहीं कर सकता। उनके इस कथित वक्तव्य पर श्री परेश रावल ने सोशल मीडिया पर कहा कि **जीप के आगे अरुन्धती राय को बाँध कर कश्मीर में घुमाना चाहिये।** इस बात से मीडिया में घमासान शुरू हो गया।

लेखिका अरुन्धती रॉय भारत विरोधी ज्ञानी-जनों (बुद्धिजीवियों) की अगुवा हैं। इस प्रकार के तथाकथित बुद्धिजीवी किसी प्रकार 'बुकर' जैसे विदेशी पुरस्कार कबाड़ कर स्वयं पर 'ज्ञानी' होने का ठप्पा लगवा लेते हैं। ज्ञानी होने का प्रमाण-पत्र मिलने के बाद इस श्रेणी के लोग देश विरोधी अनर्गल वक्तव्य देना शुरू कर देते हैं। सेकुलरवादी समाचार-पत्र व चैनल भी उनके वक्तव्यों को महत्व देते हैं। यह सब एक सोचे-समझे षड़यंत्र के अनुसार चलता है। श्री परेश रावल के सुझाव का समर्थन तो नहीं किया जा सकता, किन्तु बुद्धि के अरुन्धती जैसे ठेकेदारों की मानसिकता समझनी भी जरूरी है।

चीन ने बीस जासूसों को मृत्युदण्ड दिया

चीन ने ऐसे बीस लोगों को मरवा दिया है जो अमरीकी खुफिया एजेंसी सी.आई.ए. के लिये जासूसी कर रहे थे। इन सभी जासूसों को बिना न्यायालय में सुनवाई के मौत के घाट उतार दिया गया। यह समाचार गत २२ मई को 'न्यूयार्क टाइम्स' में प्रकाशित हुआ था। इस पर प्रतिक्रिया करते हुए चीन के प्रमुख दैनिक 'ग्लोबल टाइम्स' ने लिखा कि उक्त बीस जासूसों का सफाया कर चीनी सरकार ने ठीक कदम उठाया है। दुश्मन देश के गुप्तचरों के साथ यही किया जाना चाहिये।

लेकिन भारत में तो ऐसे जासूसों को गिरफ्तार करने के बाद कुछ राज्य सरकारें उनको सेकुलरवाद के नाम पर छुड़वा देती हैं। उत्तर प्रदेश की पहले की सरकारें यही करती थीं। देवबन्द, अलीगढ़, आजमगढ़ आदि स्थानों से सी.बी.आई. पाकिस्तानी जासूसों को पकड़ती थी और समाजवादी सरकार उन्हें मुक्त कर देती थी। ऐसे एजेंटों की गिरफ्तारी पर 'एम्नेस्टी इंटरनेशनल' जैसे मानवाधिकारी संगठन भी बवाल मचा देते हैं।

चीन में तो ऐसे एजेंटों पर न्यायालय में मुकदमा भी नहीं चलाया गया और गुप-चुप उनका काम तमाम कर दिया गया। अब ये मानवाधिकारों के लिये जूझने वाले क्या कर रहे हैं। मानवाधिकारों का हनन क्या उन्हें भारत में ही दिखाई देता है?

जिंजियांग प्रांत में भी बढ़ाई सख्ती- चीन सरकार ने अलगाववाद से निपटने के प्रयास तेज कर दिए हैं। बुर्के और मोहम्मद जैसे नामों पर पाबंदी के बाद अब चीन ने मुस्लिम बहुल इलाकों में मुस्लिम आबादी का डीएनए टेस्ट करवाने का निर्णय किया है। स्थानीय पुलिस ने इस काम के लिए ८७ लाख डॉलर के उपकरण खरीद की प्रक्रिया शुरू की है। नए उपकरणों से एक दिन में दस हजार लोगों की डीएनए जांच की जा सकेगी। ऐसा माना जा रहा है कि चीन सरकार कुछ ही समय में पूरे जिनजियांग प्रांत की मुस्लिम आबादी के डीएनए का लेखा जोखा तैयार कर लेगी।

चाकमा और हाजोंग विस्थापितों को मिलेगी नागरिकता

बांग्लादेश के पर्वतीय चट्टग्राम अंचल से विस्थापित होकर अरुणाचल प्रदेश में निवास कर रहे चाकमा एवं हाजोंग जनजाति के लोगों को जल्द ही भारत की नागरिकता मिलेगी। बांग्लादेश (तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान) में वर्ष १९६२ में कपताई बांध बनाया गया था। उस समय षड़यंत्र के तहत डूब क्षेत्र में आने वाले चाकमा और हाजोंग जनजाति की बस्तियों के लिए कोई वैकल्पिक व्यवस्था नहीं की गई। मांग करने पर उन्हें प्रताड़ित किया जाने लगा जिसके कारण इन्हें विस्थापित होकर भारत आना पड़ा। चालीस हजार बौद्ध चाकमा और हिन्दू मतावलम्बी हाजोंग तभी से अरुणाचल प्रदेश में रह रहे हैं। अब केन्द्र और राज्य सरकार इन्हें भारत की नागरिकता देगी। अरुणाचल प्रदेश की जनता की इच्छा को ध्यान में रखते हुए तय किया गया है कि इन्हें जनजाति की मान्यता नहीं दी जाएगी।

पटरी से उतरता पश्चिम बंगाल

बांग्लादेश से सटे होने के कारण सामरिक महत्व वाले हमारे राज्य पश्चिम बंगाल की स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही है। वहां, कट्टरपंथी लगातार हावी होते जा रहे हैं और इन्हें रोकने की जगह राज्य सरकार इनको प्रश्रय देने में लगी है। राज्य के हालात बयां करती तीन घटनाएं–

मौलाना पर कार्रवाई में लगे छह वर्ष

मई महीने की १७ तारीख तक कोलकाता की टीपू सुल्तान मस्जिद के इमाम थे मौलाना नूर उर रहमान बरकती। ये वही मौलाना हैं जो सभी नियम कानून को धता बताते हुए सार्वजनिक मंच से जिहाद की बात किया करते थे लेकिन सत्ताधारी दल से नजदीकियों की वजह से इन पर लंबे समय तक कार्रवाई नहीं हुई।

बरकती ने वर्ष २०११ में आतंकी ओसामा बिन लादेन की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करवाई थी। इसी वर्ष ७ जनवरी को कोलकाता में नोटबंदी के खिलाफ हुए एक कार्यक्रम में बरकती ने देश के प्रधानमंत्री का अपमान करने वाले को २५ लाख रुपए का इनाम देने की घोषणा की थी। जब केन्द्र सरकार ने लालबत्ती पर रोक लगाई तो इन्होंने यह कहते हुए लाल बत्ती हटाने से इनकार कर दिया कि वे धार्मिक नेता हैं इसलिए लाल बत्ती नहीं हटाएंगे। उन्होंने कहा *'मैं केन्द्र सरकार के निर्णय नहीं मानता'।* साथ ही उन्होंने प्रधानमंत्री पर भी आपत्तिजनक टिप्पणी की थी जिसके बाद उन पर पुलिस थाने में आपराधिक मामला दर्ज हुआ था। मामला दर्ज होने के बाद ही राज्य सरकार पर दबाव बना और १७ मई को गुलाम मोहम्मद वक्फ ट्रस्ट ने उन्हें इमाम पद से हटा दिया।

घर में कैद हुई खातून

मालदा में कट्टरपंथियों के कारण १३ वर्षीय बालिका खातून का घर से निकलना बंद हो गया है। उसका दोष सिर्फ इतना था कि उसने एक बालविवाह रुकवा दिया था। चार महीने पहले १७ जनवरी को खातून पड़ोस में एक शादी समारोह में गई थी। वहां देखा तो दुल्हन की उम्र बहुत कम थी। उसने जिला प्रशासन को शिकायत कर दी और प्रशासन ने शादी रुकवा दी। गुस्साए पड़ौसियों ने उसकी पिटाई कर दी थी, जिसके कारण वह कई दिनों तक गंभीर हालत में मालदा मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती रही। यह समाचार प्रकाशित हुआ तो २४ फरवरी को ब्लॉक विकास अधिकारी ने उसका सम्मान किया और फिर महिला दिवस पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने उसको सम्मानित किया।

कट्टरपंथियों को यह पसंद नहीं आया। उन्हें लगता है कि खातून मज़हब के खिलाफ जा रही है। उन्होंने खातून को परेशान करना शुरु कर दिया। उक्त मामले में गिरफ्तार किए गए लोग भी जमानत पर छूट कर उसे और उसके परिवार को जान से मारने की धमकी दे रहे हैं। बाहर निकलती है तो फब्तियां कसी जाती हैं। इस कारण दो महीने से उसका स्कूल जाना बंद है। पुलिस प्रशासन से शिकायत करने के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं हुई इसलिए अब खातून घर रहकर ही पढ़ाई कर रही है।

टीएमसी कार्यालय में बम विस्फोट

वर्द्धमान जिले के आसग्राम स्थित तृणमूल कांग्रेस कार्यालय में ७ मई को एक बम विस्फोट हुआ जिसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई और तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। आस–पास के निवासियों के अनुसार हादसे में कई लोग मारे गए लेकिन प्रशासन ने इससे इनकार किया है। प्रारंभिक जांच में यह खुलासा भी हुआ कि विस्फोटक कार्यालय के भीतर ही रखा हुआ था। हालांकि बाद में प्रशासन इस मामले में लीपापोती करने लगा। अंग्रेजी दैनिक **द हिन्दू** (९मई) के अनुसार विस्फोट के समय कार्यालय में छह लोग बैठे थे। विस्फोट इतना भारी था कि पूरा भवन धराशायी हो गया। स्थानीय लोगों ने बताया कि विस्फोट के बाद कई घायलों एवं मृतकों को तृणमूल कार्यकर्ता उठा ले गए।

यह पश्चिम बंगाल का वही जिला है जिसमें वर्ष २०१४ के दौरान भी एक मकान में विस्फोट हुआ था जिसमें दो लोग मारे गए थे। उस मामले की राष्ट्रीय जांच एजेंसी'एनआईए' ने जांच की तो खुलासा हुआ कि यहां बांग्लादेशी आतंकियों ने ठिकाना बनाया हुआ था। **जमीयत उल मुजाहिदीन** से सम्बद्ध आतंककारी यहां बने बमों की सहायता से बांग्लादेश सरकार का तख्ता पलट कर वहां शरीयत कानून के तहत सत्ता स्थापित करने का षड़यंत्र कर रहे थे।

असम में जड़ों की ओर लौटने का प्रयास

पूर्वोत्तर के राज्य असम में एक अनुकरणीय शुरुआत की गई है। राज्य सरकार ने अपने कर्मचारियों को पहले और तीसरे शनिवार को कार्यालय में पारम्परिक कपड़े पहनकर आने का सुझाव दिया है जिसके बाद अनेक कर्मचारी ६ मई (इस महीने का पहला शनिवार) को धोती–कुर्ता, मेखला–छादर जैसे परिधान पहनकर आए।

प्रधान सचिव (कार्मिक) पी के बोरठाकुर ने २६ अप्रेल को पत्र लिखकर कर्मचारियों को पारम्परिक परिधान में कार्यालय आने का सुझाव दिया था। बोरठाकुर ने अपने पत्र में लिखा कि अधिकारियों व कर्मचारियों में पारंपरिक पहनावे को बढ़ावा देना जरूरी है। इसलिए कर्मचारियों को महीने के पहले व तीसरे शनिवार को स्वैच्छिक तरीके से पारंपरिक पहनावे में दफ्तर आने को कहा जा सकता है। पत्र जारी होने से पूर्व ही २१ अप्रेल को प्रशासनिक सेवा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य सचिव वी के पिपसेनिया सहित सभी वरिष्ठ अधिकारी पारम्परिक परिधान में उपस्थित हुए थे।

नारद जयंती पर पूरे प्रदेश में मनाया गया पत्रकार दिवस

इस बार विश्व संवाद केन्द्र की ओर से प्रदेश में बड़ी संख्या में नारद जयंती के कार्यक्रम आयोजित हुए। खास बात यह है कि आद्य पत्रकार नारद जी की जयंती पर हुए इन कार्यक्रमों में पत्रकारों की सहभागिता भी अच्छी रही। कार्यक्रमों में पिछले वर्ष उत्कृष्ट कार्य करने वाले पत्रकारों का सम्मान भी किया गया। इन कार्यक्रमों में वक्ताओं ने पत्रकारों से समाज एवं राष्ट्रहित में सार्थक पत्रकारिता करने की अपील की।

पाली–रोटरी क्लब भवन में १६ मई को आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता विष्णु प्रसाद चतुर्वेदी ने कहा कि पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है जो सही को सही एवं गलत को गलत कहने की हिम्मत रखता है। पत्रकारों को देश की भावी चुनौतियों को देखते हुए सार्थक पत्रकारिता करनी चाहिए, जो न केवल समाज के नैतिक चरित्र को बनाए रखे अपितु इन विकट परिस्थितियों में भी हमारी स्वर्णिम तथा ऐतिहासिक संस्कृति को जीवित रखने में सहायक हो।

बीकानेर–रानी बाजार स्थित मेढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार भवन में १४ मई को आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्रीय प्रचार प्रमुख श्री महेन्द्र सिंघल ने कहा कि लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ पत्रकारिता को भी अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए। नारद जी की तरह ही पत्रकार को अध्ययनशील होना चाहिए और समाचार पत्रों को केवल मात्र सूचना प्रसारण करने वाला न रहकर उन्हें घटना का उचित विश्लेषण भी करना चाहिए और सार्थक समाज की रचना कर लोकतंत्र को मजबूत करना चाहिए। सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि, विनायक पत्रिका के प्रधान सम्पादक श्री सन्तोष जैन ने भी पत्रकारिता के रचनात्मक पहलुओं पर प्रकाश डाला और पत्रकार से निर्भीक होकर आम समाज के हित में पत्रकारिता करने का आह्वान किया।

श्रीगंगानगर– केशवकुंज में १४ मई को आयोजित कार्यक्रम में दैनिक लोक सम्मत के संस्थापक संपादक श्री शिव कुमार स्वामी ने पत्रकारिता के गिरते स्तर पर चिंता व्यक्त की। वहीं वरिष्ठ पत्रकार श्री रेवती रमण शर्मा ने गीता के श्लोक के माध्यम से प्रभावी संवाद की महत्ता पर प्रकाश डाला और सांध्य बॉर्डर टाईम्स के संपादक श्री रवि चामड़िया ने नारद जी की वैदिक भूमिका के माध्यम से पत्रकारिता को समझाया।

जयपुर में आयोजित नारद जयंती एवं पत्रकार सम्मान समारोह में उपस्थित अतिथिगण एवं सम्मानित होने वाले पत्रकार। इस बार उत्कृष्ट कार्य के लिए दो वरिष्ठ पत्रकारों, प्रिंट एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया के दो-दो पत्रकारों, एक फोटो पत्रकार और एक डिजिटल मीडिया पत्रकार को सम्मानित किया गया।

जैसलमेर–जनसेवा समिति सभागार में ११ मई को देवऋषि नारद जयंती का आयोजन किया गया। समारोह में स्वर्णनगरी के वरिष्ठ पत्रकारों को सम्मानित भी किया गया। संघ के जिला प्रचार प्रमुख मांगीलाल बम्भणिया ने कार्यक्रम में कहा कि देवऋषि नारद ने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया था। वर्ष १८२६ में नारद जयंती के अवसर पर ही पहले हिंदी अखबार उदंत मार्तंड में संपादक ने अपने संपादकीय को नारद मुनि को समर्पित करते हुए उन्हें आद्य पत्रकार बताया था।

धौलपुर–१४ मई को आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व न्यायाधीश श्री अशोक सक्सेना ने की एवं मुख्य वक्ता वरिष्ठ शिशुरोग विशेषज्ञ डॉ. विजय सिंह थे। इस अवसर पर डॉ. सिंह ने कहा कि समाज में स्वतंत्र, निर्भीक, सत्यवादी एवं राष्ट्रवादी पत्रकारों की महती आवश्यकता है। देवर्षि नारद विश्व के प्रथम एवं आदर्श पत्रकार हैं। समाज में व्याप्त बुराइयों व दूरस्थ व्यक्ति की तकलीफ को सरकार अर्थात भगवान तक पहुंचाना तथा सरकार की समाजोपयोगी व लोक कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी जरूरतमंदों तक पहुँचाने का काम नारद जी विनोद-विनोद में ही कर दिया करते थे।

अलवर– नए सूचना केन्द्र में १३ मई को आयोजित कार्यक्रम में प्रख्यात पत्रकार श्री गोपाल शर्मा ने कहा कि भारत की पत्रकार परम्परा विश्व में सबसे प्राचीन है जिसके उदाहरण नारद मुनि हैं। नारद मुनि निर्भीक, निडर, सत्ता का भय नहीं रखने वाले, सतत जागरूक, निरंतर चलने वाले आद्य पत्रकार थे । उन्होंने कहा की पत्रकारिता सत्य के साथ और राष्ट्रीयता से सरोकार रखने वाली होनी चाहिए। जो भी सत्य को समाज के सामने रखते हैं, वे सभी पत्रकार हैं।

अजमेर– कार्यक्रम में मुख्य वक्ता पाञ्चजन्य के संपादक डॉ. हितेश शंकर ने कहा कि खबरों का आदान-प्रदान करने के लिए जिस प्रकार नारदजी तुरन्त एक लोक से दूसरे लोक में पहुंच जाते थे, उसी प्रकार आज टीवी पर न्यूज चैनलों के माध्यम से दर्शक दुनिया भर में घटित होने वाली घटनाओं को लाइव देखते हैं। यह नारदजी की विश्सनीयता थी कि वे कभी भी सूचनाओं का गलत आदान-प्रदान नहीं करते थे और न ही कभी अपने स्वार्थ के खातिर सूचना देते थे। उन्होंने कहा कि पत्रकारों को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता था, लेकिन आज यह चौथा स्तंभ ही बाकी तीन स्तंभों को गिराने में लगा हुआ है।

कोटपूतली, टोंक, फलौदी, कोटा, चित्तौड़गढ़, निम्बाहेड़ा, भीलवाड़ा और राजसमंद में भी नारद जयंती के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित हुए।

संघ के तृतीय वर्ष के प्रशिक्षण वर्ग में श्री होसबोले ने कहा–

संघ को जानना है तो संघ का काम करना पड़ेगा

रेशिमबाग स्थित डॉ. हेडगवार स्मृति भवन परिसर में गत १५ मई को तृतीय वर्ष के संघ शिक्षा वर्ग का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन सत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले ने कहा कि संघ को यदि जानना है तो संघ के विषय में किताबें पढ़ना, अनुसंधान करना पर्याप्त नहीं है। संघ को जानना–समझना है तो संघ का प्रत्यक्ष कार्य करना पड़ेगा। जिस तरह तैराकी सीखने के लिए नदी में कूदना ही पड़ेगा और धारा के विपरीत चलना पड़ेगा, वैसे ही संघ को बाहर रह कर नहीं समझा जा सकता। उन्होंने कहा कि ये राष्ट्र क्या है? हिन्दू राष्ट्र क्या है ? संघ का कार्य क्यों, कैसे ? ऐसे मूल प्रश्नों का समाधान प्रशिक्षण वर्ग के माध्यम से होता है। शरीर तो स्वस्थ है, पर अपने मन को भी स्वस्थ, चुस्त और संवेदनशील बनाने की साधना यह प्रशिक्षण वर्ग है। अलग भाषा, अलग पहनावा, अलग खानपान, पर फिर भी एक हो कर, राष्ट्र के लिए समर्पित हो कर, जब आप यह प्रशिक्षण पूर्ण करेंगे तो आप स्वत: ही अखिल भारतीय व्यक्तित्व बन जाएंगे।

जयपुर में सेविका समिति का वर्ग

जयपुर में जवाहर नगर स्थित आदर्श विद्या मन्दिर में १६ मई को राष्ट्र सेविका समिति के १५ दिवसीय **प्रबोध शिक्षा वर्ग** शुरू हुआ। वर्ग २ जून तक चलेगा। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में मेजर एस एन माथुर ने कहा कि बेल्जियम के लोग मत्स्य देवता की पूजा करते हैं। यूरोप के कई देशों में भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित अनेक अवशेष आज भी मिलते हैं। कुछ अवशेषों को आयरलैण्ड के एक संग्रहालय में देखा जा सकता है। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी का उद्भव देववाणी संस्कृत से हुआ है।

क्षेत्र कार्यवाहिका सुश्री प्रमिला शर्मा ने बताया कि इस शिक्षा वर्ग में पूरे राजस्थान की शिक्षार्थी भाग ले रही हैं। शिक्षा वर्ग का उद्देश्य बहनों में समाज के प्रति जागरूकता लाना व उन्हें शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक दृष्टि से सक्षम बनाना है। सेविका समिति का प्रारम्भिक शिक्षा वर्ग १४ से २१ मई तक कोटा में सम्पन्न हुआ।

जोधपुर में स्वदेशी जागरण मंच की बैठक

जोधपुर इण्डस्ट्रीयल ऐसासिएशन सभागार में १२ मई को स्वदेशी जागरण मंच के जोधपुर प्रांत कार्यकताओं की बैठक आयोजित हुई।

मंच के राष्ट्रीय संगठक कश्मीरी लाल ने बैठक में कहा कि चीन की आर्थिक कूटनीति के कारण भारत के कुटीर और मझोले उद्योग–धंधे बन्द होने की कगार पर हैं। राष्ट्रीय स्वदेशी सुरक्षा अभियान के तहत मंच ने देशभर में एक करोड़ लोगों के हस्ताक्षर करवा कर ११ मई को प्रधानमंत्री को एक ज्ञापन सौंपा है। मंच अभियान चलाकर स्वदेश निर्मित वस्तुओं को अधिकाधिक उपयोग में लेने की अपील करेगा।

अधिवक्ता परिषद का रजत जयंती समारोह सम्पन्न

अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद का रजत जयंती वर्ष समारोह १३ मई को जयपुर स्थित तोतूका भवन में मनाया गया। इस कार्यक्रम में प्रदेश के ८०० अधिवक्ताओं ने भाग लिया। समारोह में केन्द्रीय विधि एवं न्याय राज्यमंत्री पी पी चौधरी ने कहा कि कोई भी राष्ट्र धर्मनिरपेक्ष नहीं होता, वो पंथ निरपेक्ष होता है। इसी तरह भारत भी पंथ निरपेक्ष राष्ट्र है, जिसमें सभी को अपनी धार्मिक मान्यताओं और उपासना पद्धति को मानने की आजादी वहीं तक है, जब तक राष्ट्र की अस्मिता को खतरा न होता हो। राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश एम एन भण्डारी ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि सभी के लिए समान कानून होने चाहिए। उन्होंने अदालतों में हिन्दी का उपयोग बढ़ाने की अपील भी की। कार्यक्रम में वरिष्ठ अधिवक्ताओं का सम्मान भी किया गया।

किसान संघ का अधिवेशन सम्पन्न

जयपुर स्थित केशव विद्यापीठ में १८ से २१ मई तक भारतीय किसान संघ का प्रदेश अधिवेशन आयोजित हुआ। अधिवेशन में पूरे प्रदेश से आये ८२५ किसानों ने भाग लिया। किसान संघ के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री दिनेश ने अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए कहा कि किसान भारतीय कृषि को जैविक खेती की ओर ले जाने का प्रयास करें। सरकार को सही समय पर कृषि उत्पादों की समर्थन मूल्य पर खरीद सुनिश्चित करनी चाहिए। अधिवेशन में प्रस्ताव पारित कर कृषि पर विधानसभा का विशेष सत्र बुलाने, कृषि उत्पाद का लाभकारी मूल्य तय कर खरीद करने, सरसों का जीएम बीज प्रतिबंधित करने और सिंचाई संरचना विकास में सांसद एवं विधायक निधि के उपयोग की मांग की गई। अधिवेशन में यह भी तय किया गया कि इन मांगों पर विचार नहीं किया गया तो १५ जून से जयपुर में महापड़ाव शुरू किया जाएगा।

बूंदी में सर्वजातीय विवाह सम्मेलन सम्पन्न

सेवा भारती की ओर से १२ मई को बूंदी के नैनवां रोड स्थित आदर्श विद्या मंदिर में श्रीराम जानकी सर्वजातीय सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित हुआ। सम्मेलन में सिख समाज के पांच जोड़ों सहित दस जातियों के कुल ३६ जोड़े विवाह सूत्र में बंधे। इस अवसर पर सेवा भारती के क्षेत्रीय संगठन मंत्री मूल चन्द सोनी ने कहा कि हमारे धर्मग्रंथों, धर्माचार्यों और महापुरुषों ने हमेशा सहअस्तित्व और समरसता की बात कही है। समाज में इस तरह के आयोजन सामाजिक समरसता का संदेश देते हैं और फिजूलखर्ची को रोकने में सहायक हैं। बूंदी में यह कार्यक्रम पाँच वर्षों से हो रहा है।

क्यों भटका हुआ है भारत का मीडिया?

आवरण पृष्ठ पर हिन्दुत्व की विराट झलक पाकर मन हर्षित हो गया। भारत रूपी शरीर की महान् आत्मा हिन्दुत्व ही है। हिन्दू आध्यात्मिक संस्कृति में 'ॐ' दिव्य महामंत्र है जिसके उच्चारण से 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भव्य परिकल्पना हमारे मस्तिष्क में विद्यमान रहती है। हिन्दुत्व सनातन काल से सम्पूर्ण विश्व में मानवता का शंखनाद करता रहा है।

– किशनलाल जांगिड़, *जोधपुर*

मुख-पृष्ठ पर दर्शाये गए हिन्दुत्व के मूल सिद्धांत आकर्षक लगे।

– महेन्द्र कुमार, *जयपुर*

एक दिन दुनिया हिन्दुत्व के रास्ते पर चलेगी। पश्चिम भी हिन्दुत्व का मर्म समझेगा। भारत और हिन्दुत्व का वही सम्बंध है जो शरीर और आत्मा का है। एक मई के अंक में भारत के मीडिया पर लेख पढ़ा। आतंकियों और पत्थरबाजों के मानवाधिकारों के लिए हमारा मीडिया जमीन आसमान एक कर देता है लेकिन आतंक के शिकार जवानों एवं निर्दोष लोगों की परवाह ही नहीं करता। आखिर क्यों भारत का मीडिया खाने वाली थाली में ही छेद करने वाला बना हुआ है।

–हुकम चन्द चौधरी, *सपोटरा, करौली*

भारत हिन्दू राष्ट्र था और आगे भी रहेगा। बीच में कुछ काल खण्ड के लिए हिन्दुत्व का ह्रास करने वाले शासक आ गए थे पर अब वह समय समाप्त हो गया है। आने वाला समय हिन्दुत्व का ही है।

–रोशन लाल गोखरू, *कांगनी, भीलवाड़ा*

साभार : दैनिक जागरण

अंक संदर्भ : १६ अप्रेल व १ मई २०१७

हिन्दुत्व को सरल रूप से परिभाषित किया गया है। हिन्दुत्व किसी एक वर्ग का धर्म ना होकर सम्पूर्ण राष्ट्र से बना एक परिवार है। हिन्दुत्व किसी अन्य धर्म का खण्डन नहीं करता और सभी में एकता का भाव प्रकट करता है।

– दीपेन्द्र सिंह खंगारोत, *बिचून, जयपुर*

गोहत्या पर पूरे देश में हो पाबंदी

गुजरात में गोहत्या पर आजीवन कारावास की खबर पढ़कर खुशी हुई। ऐसा अभियान चलाया जाना चाहिए कि अन्य प्रांतों की सरकारें भी गुजरात का अनुकरण कर गोहत्या कानून को कठोर बनाने का प्रयास करें।

– मनोहर लाल बुनकर, *भीलवाड़ा*

'क्यों भटका हुआ है भारत का मीडिया' लेख हो या 'भारत की नीव है संस्कृत', सभी संग्रहणीय हैं। 'बाल प्रश्नोत्तरी' और वीर सावरकर की जीवन गाथा भी किशोरों के सामान्य ज्ञान वृद्धि के लिए उपयोगी है।

– देवकृष्ण कौशिक, *बीकानेर*

'क्यों भटका हुआ है भारतीय मीडिया' आंखें खोल देने वाला लेख था। ऐसे मीडिया संस्थानों पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए जो देश के वातावरण को विषाक्त बना रहे हैं।

– डॉ सोहन लाल, *बांदीकुई, दौसा*

यह जानकर आश्चर्य हुआ कि १९८० के दशक में बिके हुए २०० पत्रकार रूस से पैसा लेकर उसके हित में भारत विरोधी खबरें छापते थे। तत्कालीन सरकारें भी रूस के दबाव में रहती थीं।

– रामावतार मित्तल, *सवाई माधोपुर*

इस अंक में मीडिया के बारे में जो बताया गया, वह सत्य है। अधिकतर समाचार माध्यमों में या तो विदेशी पैसा लगा है या वे किसी राजनीतिक पार्टी से जुड़ें हैं। इस कारण उनका रुख नकारात्मक बना रहता है। देश के हित में क्या है और क्या छापने लायक है, इसकी वे परवाह नहीं करते।

– मदन सिंह सिंदल, *सादड़ी, पाली*

'बच्चों की तो सुनो सरकार' शीर्षक के साथ प्रकाशित कक्षा दस की छात्रा का पत्र मार्मिक था। छात्रा ने पत्र में पूरे राष्ट्र की भावना व्यक्त की है। इस पत्र को पढ़कर आशा जगी कि नई पौध में राष्ट्रप्रेम की भावना जग रही है।

– टेकचन्द्र शर्मा, *झुंझुनू*

देश विदेश के प्रतिष्ठानों एवं संस्थाओं के संस्कृत में ध्येय वाक्यों की जानकारी अच्छी लगी। यह तो अब मान्य तथ्य है कि संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है।

– मुकेश कुमार, *उदयपुर*

बंद हो तुष्टीकरण

बंगाल में छात्रों को वहाबीवादी टीटू मीर की जीवनी पढ़ाए जाने का समाचार पढ़ा। यह चिंता का विषय है कि वोटों के लिए तुष्टीकरण की नीति बंगाल सरकार को इस स्तर तक ले आई है कि वह एक खलनायक को महानायक की तरह पेश कर रही है।

–राकेश चौहान, *पीलवा, सीकर*

हिन्दू और हिन्दुत्व

आवरण कथा में हिन्दुत्व शब्द की सही व विस्तृत व्याख्या की गई है। हिन्दुत्व रिलीजन नहीं है। जो इसे रिलीजन मानते हैं वे न तो 'हिन्दू' को समझते हैं और न 'हिन्दुत्व' को। जो हिन्दुत्व को समझ जाएगा वही भारत को समझ सकता है। एक मई के अंक में 'क्यों भटका हुआ है भारत का मीडिया' पढ़ा। भारत के मीडिया को भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं श्रेष्ठ परम्पराओं में कुछ भी अच्छा नहीं दिखता। उसे सिर्फ समाज के कुछ दोष और नकारात्मक प्रवृत्तियां ही दिखाई देती हैं। उन्हीं को बढ़ा चढ़ा कर दिखाना उसका उद्देश्य बन गया है।

–देवकीनन्दन शर्मा, *भगेगा, सीकर*